

मीकनपुर की बढहाली पर उठी आवाज, सीएम को भेजा मांग पत्र

समाधान न होने पर आंदोलन की चेतावनी

टीएनएफ टुडे, एत्मादपुर।

विकासखंड एत्मादपुर के भीकनपुर गांव की बुनियादी समस्याओं को लेकर संपूर्ण समस्या समाधान संगठन (किसान) ने मुख्यमंत्री को संबोधित मांग पत्र सौंपा। संगठन ने गांव में विकास कार्य कराने और लंबे समय से बनी समस्याओं का जल्द समाधान करने की मांग की है।

मांग पत्र में गांव के दो तालाबों के सौंदर्यीकरण और वहां तक पहुंचने वाली सड़कों के निर्माण की मांग की गई है। इसके साथ ही मंदिर मार्ग को पक्का कराने की जरूरत भी उठाई गई है, ताकि ग्रामीणों को आवागमन में परेशानी न हो।

जर्जर भवन और सफाई व्यवस्था पर सवाल



संगठन ने गांव के विद्यालय और ग्राम पंचायत भवन की खराब स्थिति पर चिंता जताई। मांग पत्र के अनुसार, शौचालय और पानी की टंकी भी जर्जर हालत में हैं, जबकि क्षतिग्रस्त बाड़ड़ी वॉल से सुरक्षा संबंधी समस्याएं बनी हुई हैं। ग्रामीणों ने नियमित सफाई न होने

और जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे होने का मुद्दा भी उठाया।

संगठन ने सुरइया फीडर से जुड़ी बिजली लाइन के जर्जर तारों को बदलवाने की मांग की। पदाधिकारियों का कहना है कि तार टूटकर गिरने की आशंका से हादसे का खतरा बना हुआ है। वहीं,

- तालाबों का सौंदर्यीकरण और मंदिर मार्ग बनवाने की मांग
- जर्जर स्कूल, पंचायत भवन और टूटी पानी की टंकी का मुद्दा उठाया
- आवारा पशुओं, गंदगी और बिजली के तारों से किसान परेशान

आवारा पशुओं के कारण किसानों को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

संगठन के पदाधिकारियों ने चेतावनी दी कि यदि समस्याओं का जल्द समाधान नहीं हुआ, तो किसानों के हित में आगे कदम उठाए जाएंगे। इस दौरान संगठन के युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेंद्र सिंह त्यागी, नरेंद्र सिंह सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

महिलाओं की शिकायतों पर पुलिस का फोकस, पिंग हेल्प डेस्क पर सुनीं समस्याएं

मिशन शक्ति और एंटी रोमियो टीम ने हेल्प डेस्क पर सुनीं समस्याएं

टीएनएफ टुडे, फतेहाबाद।

तहसील फतेहाबाद में शनिवार को पिंग समाधान दिवस के अवसर पर मिशन शक्ति और एंटी रोमियो टीम ने पिंग हेल्प डेस्क के माध्यम से महिलाओं की समस्याएं सुनीं। अधिकारियों ने महिलाओं की शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण करने के साथ उन्हें मिशन शक्ति अभियान के छठवें चरण के तहत जागरूक किया। महिलाओं को सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन के प्रति जागरूक करते हुए जरूरत पड़ने पर पुलिस की सहायता लेने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं को विभिन्न हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी दी गई। इनमें महिला सुरक्षा के लिए 1090, आपातकालीन सहायता के लिए 112, साइबर अपराध की शिकायत के लिए 1930, बाल



सहायता के लिए 1098, एंबुलेंस सेवा के लिए 102 और 108 तथा महिला हेल्पलाइन 181 शामिल हैं।

टीम ने महिलाओं को बताया कि किसी भी प्रकार की समस्या होने पर इन हेल्पलाइन नंबरों के माध्यम से सहायता प्राप्त की जा सकती है। थाना फतेहाबाद की मिशन शक्ति प्रभारी शिवानी आर्य, महिला उपनिरीक्षक नीतल चौधरी, एंटी रोमियो प्रभारी शिवानी

सपा की भावी प्रत्याशी ममता शर्मा ने तेज किया जनसंपर्क, जनता से किया सीधा संवाद

स्थानीय लोगों से किया संवाद, विकास के मुद्दों पर चर्चा

- नूनहाई और प्रकाश नगर में लोगों से की मुलाकात
- सड़क, बिजली, पानी और रोजगार जैसे मुद्दों पर चर्चा
- जनसंपर्क के दौरान सैकड़ों लोगों की मौजूदगी का दावा

टीएनएफ टुडे, एत्मादपुर।



जोर दिया। क्षेत्र के लोगों से बातचीत के दौरान सड़क, पेयजल, बिजली, साफ-सफाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे स्थानीय मुद्दों पर चर्चा किए जाने की बात सामने आई। उन्होंने कहा कि जनता के बीच पहुंचकर उनकी बात सुनना और उनकी समस्याओं को समझना बेहद जरूरी है। क्षेत्र का विकास तभी बेहतर तरीके से हो सकता है, जब आमजन की जरूरतों और सुझावों को प्राथमिकता दी जाए।

डॉ. ममता शर्मा ने लोगों के साथ संवाद स्थापित करते हुए जनहित के

मुद्दों पर अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। उनके जनसंपर्क का उद्देश्य क्षेत्र की जनता से सीधा जुड़ाव बनाना और उनकी समस्याओं को समझना रहा।एत्मादपुर विधानसभा क्षेत्र में लगातार जनसंपर्क के जरिए डॉ. ममता शर्मा लोगों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। इसी दौरान सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे एवं अपना समर्थन दिया इस दौरान उन्होंने आमजन से संवाद बनाए रखने और क्षेत्र की समस्याओं को प्रमुखता से उठाने पर बल दिया।



कॉलोनाइजरों पर धोखाधड़ी का आरोप, 55 परिवारों पर बिजली-पानी का संकट

इलेक्ट्रिफिकेशन का पैसा जमा न होने से कटा कनेक्शन, कार्रवाई की मांग।

एतमादपुर। द्वारिका पुरम कॉलोनी (बरहन रोड) में कॉलोनाइजरों की लापरवाही के कारण पिछले एक महीने से बिजली और पानी का संकट गहराया हुआ है। कॉलोनी के निवासी नारायण दत्त शर्मा ने सक्षम अधिकारी (तहसील एतमादपुर) को प्रार्थना पत्र सौंपकर आरोपी कॉलोनाइजरों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

पीड़ितों का आरोप है कि कॉलोनाइजरों ने कॉलोनी में फर्जी तरीके से इलेक्ट्रिफिकेशन दिखाकर प्लांट बेचे थे। जब स्थानीय निवासियों ने बिजली विभाग में अपने व्यक्तिगत कनेक्शन के लिए फाइल लगाई, तो विभाग ने यह कहकर इनकार कर दिया कि कॉलोनाइजरों द्वारा पूरे इलेक्ट्रिफिकेशन का मूल्य जमा नहीं किया गया है। इसके बाद बिजली विभाग ने कॉलोनी का कनेक्शन काट दिया।

वर्तमान में कॉलोनी में लगभग 55 मकान बन चुके हैं और लोग बिना बिजली-पानी के बेहद परेशान हैं। निवासियों ने सक्षम अधिकारी से कॉलोनाइजर राजेश्वर सिंह (उर्फ गुड्डू), राकेश्वर सिंह, और राकेश बघेल (उर्फ प्रवल प्रताप बघेल) के खिलाफ धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज कर सख्त कानूनी कार्रवाई करने की गुहार लगाई है।

पिनाहट में हनुमान की गर्जना, धू-धू कर जली सोने की लंका

रामलीला में उमड़ी भीड़, भक्तिमय माहौल में हुआ लीलाओं का मंचन



पिनाहट। कस्बा में चल रही रामलीला में लंका दहन की लीला आयोजित हुई। जिसमें लंका को जलाया देख लंका के निवासी आपस में बात करते हैं। कि साधु अवग्या कर फलु ऐसा, जरइ नगर अनाथ कर जैसा। किसी महापुरुष का अपमान करने का ये फल होता है। कि जिस लंका के नाम से त्रिलोकी कांपती थी। आज वही लंका अनाथों की नगरी की भांति जल रही है।

पिनाहट की रामलीला में शनिवार को भगवान श्रीराम के आदेश पर वानर सेना सीता माता की खोज के लिए निकलते हैं।100 योजन की लम्बाई के समुद्र को कोन पार करें। तभी जावमत्त हनुमान जी को उनके बल का स्मरण कराते हैं। तभी हनुमान जी विशाल रूप धारण करके समुद्र लांघकर कर लंका में पहुंचते हैं। जहां अनेक राक्षसों का संघार करके सीता माता को भगवान श्रीराम की मुद्रिका देकर अपनी पूंछ की आग से लंका में आग लगाकर सीता माता से आशीर्वाद लेकर वापस आते हैं। और सारे वानर प्रसन्न होकर भगवान श्रीराम को ये सब समाचार सुनाते हैं। इस लीला को देखने के लिए भारी भीड़ नगर में पहुंच रही है।

विद्यार्थियों ने सीखी फिल्म मेकिंग की बारीकियां

टीएनएफ टुडे, आगरा।

डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एंड होटल मैनेजमेंट (आईटीएचएम), संस्कृति भवन में 12 से 17 अक्टूबर तक फिल्म निर्माण पर आधारित छह दिवसीय विशेष कार्यशाला का सफलतापूर्वक समापन हुआ। कुलपति प्रो. आशु रानी के दिशा-निर्देशन और संस्थान के निदेशक प्रो. यू.एन. शुक्ला की देखरेख में आयोजित इस कार्यशाला



का संचालन 'ग्लेमर लाइव फिल्मस्' के निदेशक सूरज तिवारी ने किया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विभिन्न आवासीय संस्थानों—जैसे पर्यटन एवं होटल संस्थान, दाऊ दयाल संस्थान, इंस्टीट्यूट ऑफ बेसिक साइंस, इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, केएमआई और कंप्यूटर केंद्र के 178 विद्यार्थियों ने गूगल फॉर्म के माध्यम से पंजीकरण कर हिस्सा लिया। यह आयोजन आगामी 8वें ग्लोबल ताज इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल की तैयारियों के

- सेठ पदम चंद जैन प्रबंधन संस्थान ने वीआईएफ के अंतर्गत इनक्यूबेटेड संस्था AISkool द्वारा हुआ आयोजन
- 46 विद्यार्थियों ने लिया भाग, माइक्रोसॉफ्ट पावर बीआई के जॉरिए डेटा विजुअलाइजेशन और डैशबोर्ड तैयार करने के सीखे गुर

टीएनएफ टुडे, आगरा।

डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय के सेठ पदम चंद जैन प्रबंधन संस्थान में शनिवार को के सहयोग से 'डेटा एनालिसिस यूजिंग पावर बीआई' विषय पर एक दिवसीय व्यावहारिक कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक डेटा विश्लेषण तैयार करने और वास्तविक व्यावसायिक परिस्थितियों में डेटा के उपयोग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन चर्चा की गई।

विद्यार्थियों ने अपने लैपटॉप पर स्वयं अभ्यास करते हुए जटिल आंकड़ों को सरल व प्रभावशाली दृश्य रूप में परिवर्तित करने और उससे उपयोगी निष्कर्ष निकालने की



कार्यशाला के दौरान AISkool के विशेषज्ञों ध्रुव अग्रवाल और कनिष्क मित्तल ने विद्यार्थियों को माइक्रोसॉफ्ट पावर बीआई के विभिन्न टूल्स और उनके व्यावहारिक उपयोग की विस्तृत जानकारी दी। प्रशिक्षण सत्र में डेटा प्रिपरेशन, डेटा विजुअलाइजेशन, इंटरैक्टिव डैशबोर्ड तैयार करने और वास्तविक व्यावसायिक परिस्थितियों में डेटा के उपयोग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन चर्चा की गई।

विद्यार्थियों ने अपने लैपटॉप पर स्वयं अभ्यास करते हुए जटिल आंकड़ों को सरल व प्रभावशाली दृश्य रूप में परिवर्तित करने और उससे उपयोगी निष्कर्ष निकालने की

कला सीखी। उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय के विवेकानंद इनक्यूबेशन फाउंडेशन के अंतर्गत इनक्यूबेटेड संस्था है, जिसे विश्वविद्यालय द्वारा संबद्ध महाविद्यालयों में एआई, ऑटोमेशन और उभरती तकनीकों से संबंधित कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अनुशंसित किया गया है।

इस कार्यशाला में कुल 46 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. श्वेता चौधरी द्वारा किया गया, जबकि इस अवसर पर डॉ. रूचिरा प्रसाद, डॉ. जागृति असीजा और सुश्री लकी आर्या की विशेष उपस्थिति रही।

- आईटीएचएम में छह दिवसीय फिल्म निर्माण कार्यशाला का समापन

- ग्लोबल ताज इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल की तैयारियों के तहत आईटीएचएम में आयोजित हुई कार्यशाला, 178 विद्यार्थियों ने लिया भाग

तहत किया गया, जिसके अंतर्गत विद्यार्थी एक लघु फिल्म का निर्माण कर रहे हैं। इस फिक्म की थीम

विद्यार्थियों में बढ़ते अवसाद और आत्महत्या के मामलों की रोकथाम व युवाओं को इसके प्रति जागरूक करने पर केंद्रित है।

कार्यशाला के मुख्य बिंदु निम्नलिखित रहे:

-सैद्धांतिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण: फिल्म निर्देशक सूरज तिवारी ने विद्यार्थियों को कहानी निर्माण, पटकथा लेखन, ऑडिशन

प्रक्रिया, कलाकारों के चयन तथा प्री-प्रोडक्शन, प्रोडक्शन और पोस्ट-प्रोडक्शन तक के चरणों की विस्तार

से जानकारी दी।

-कम बजट में फिल्म निर्माण: कार्यशाला का एक प्रमुख आकर्षण श्लो-बजट फिल्म मेकिंगर रहा, जिसमें सीमित संसाधनों और न्यूनतम बजट में रचनात्मक सोच के साथ बेहतरीन फिक्म बनाने के गुर सिखाए गए।

-भूमिकाओं का निर्धारण: शूटिंग के लिए विद्यार्थियों के बीच अभिनय, निर्देशन, कैमरा, और प्रोडक्शन जैसी जिम्मेदारियों का सटीक विभाजन किया गया।

डीएम ने किया मतदान केद्रों का औचक निरीक्षण

अनुपस्थित बीएलओ पर वेतन कटौती के निर्देश

टीएनएफ टुडे, आगरा।

भारत निर्वाचन आयोग के निदेशानुसार मतदाता सूची को अद्यतन करने और छूटे हुए पात्र नागरिकों के नाम जोड़ने के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी मनीष बंसल ने शुक्रवार को विभिन्न मतदान केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बीएलओ की उपस्थिति, मतदाता पंजीकरण कार्य और विशेष कैंप की व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा की।

जिलाधिकारी ने छावनी, दक्षिण और उत्तर विधानसभा क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विद्यालयों-हॉलमैन पब्लिक स्कूल, राजकीय इंटर कॉलेज (जीआईसी), एमडी जैन इंटर कॉलेज, आईआई इंटर कॉलेज और राधावल्लभ इंटर कॉलेज, दयालबाग के विभिन्न मतदान केन्द्रों (बूथ संख्या 4-8, 186-189,



211-218, 289-293 तथा 280-288) का निरीक्षण किया। उन्होंने सुपरवाइजरों और बीएलओ से प्राप्त फॉर्म, नए पंजीकरण और डेटा संशोधन की प्रगति की जानकारी ली।

निरीक्षण के दौरान कुछ बूथों पर बीएलओ के अनुपस्थित पाए जाने पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने निर्देश दिए कि सूरसदन में प्रशिक्षण में शामिल बीएलओ को छोड़कर, बिना सूचना के अपने बूथ से नदारद पाए गए

बीएलओ के विरुद्ध वेतन कटौती की कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। राधावल्लभ इंटर कॉलेज में स्काउट गाइड द्वारा अभियान में सहभागिता की सराहना करते हुए उन्होंने आगामी 24 अक्टूबर के विशेष अभियान दिवस हेतु नगर निगम के कूड़ा कलेक्शन वाहनों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से अपील की है कि आगामी 24 अक्टूबर 2026 को आयोजित होने वाले विशेष अभियान दिवस पर अपने बूथ पर पहुंचकर बीएलओ के पास अपने और परिवार के पात्र सदस्यों के नाम मतदाता सूची में अवश्य जांच लें।

हॉलमैन पब्लिक स्कूल, जीआईसी, एमडी जैन, आईआई और राधावल्लभ इंटर कॉलेज के बूथों का लिया जायजा

नाम जुड़वाने के लिए फॉर्म-6 भरें।

नाम हटाने के लिए फॉर्म-7 का उपयोग करें।

विवरण में संशोधन के लिए फॉर्म-8 भरा जा सकता है।

निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी (नगर)/उप जिला निर्वाचन अधिकारी यमुनाधर चौहान, एसीएम नितिन तेवतिया और नायब तहसीलदार अनिल चौधरी सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

नीलगाय के हमले से किसान घायल

टीएनएफ टुडे, पिनाहटा।

थाना बसई अरेला के गांव मानिकपुरा निवासी किसान श्रीकृष्ण शुक्रवार शाम करीब पांच बजे बेसहारा पशुओं से फसलों की रखवाली के लिए अपने घर से खेतों की ओर जा रहा था। तभी रास्ते में नीलगाय ने हमला कर दिया। किसान के चिल्लाने पर दौड़कर आए अन्य किसानों के भगाने पर नीलगाय भाग गयी। किन्तु सींगों से किसान बुरी तरह घायल हो गया। जिसे स्वजन द्वारा अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मानिकपुर आ प्रधान राजेश शर्मा और नगला भरी प्रधान उदय सिंह परिहार ने वन विभाग को सूचना देकर नीलगाय को पकड़वाने की मांग की है। किसानों का कहना है। कि वे नीलगाय कई किसानों पर हमला कर घायल कर चुकी है। सामाजिकी वानिकी रेंजर गजेन्द्र चौधरी ने बताया टीम गांव में गश्त कर रही है। जल्द ही पकड़ने की कोशिश में जुटी है।

आयुक्त नगेंद्र प्रताप और डीएम की अध्यक्षता में प्रत्याशियों और एजेंटों के साथ हुई बैठक

आयुक्त समागार में संपन्न हुई बैठक, मतदान और मतगणना एजेंटों की नियुक्ति तथा निर्धारित प्रार्यों की दी गई जानकारी

मतदान अभिकर्ता के लिए फॉर्म-10 और मतगणना एजेंट के लिए फॉर्म-18 मरकर 24 अक्टूबर की शाम तक जमा करने के निर्देश

टीएनएफ टुडे, आगरा।

उत्तर प्रदेश विधान परिषद के आगरा खंड स्नातक एवं शिक्षक निर्वाचन क्षेत्रों के द्विवार्षिक निर्वाचन-2026 को निष्पक्ष और पारदर्शी रूप से संपन्न कराने के उद्देश्य से आयुक्त/रिटर्निंग ऑफिसर नगेंद्र प्रताप की अध्यक्षता और जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी मनीष बंसल की उपस्थिति में आयुक्त सभागार में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में सभी प्रत्याशियों, उनके अधिकृत प्रतिनिधियों और निर्वाचन एजेंटों ने हिस्सा लिया। बैठक के दौरान निर्वाचन प्रक्रिया



को सुव्यवस्थित बनाने के लिए एजेंटों की नियुक्ति, उनके पहचान-पत्र और मतदान के नियमों की विस्तृत जानकारी दी गई। मुख्य बिंदु निम्नलिखित रहे:

मतदान अभिकर्ता: मतदान अभिकर्ता बनने के लिए फॉर्म-10 भरकर मतदान केंद्र पर पीठासीन अधिकारी को जमा करना होगा।

गणना एजेंट: मतगणना एजेंट बनने के लिए फॉर्म-18 में राजनीतिक दलों/प्रत्याशियों द्वारा 14 नाम व पूर्ण विवरण भरकर 24 अक्टूबर की शाम तक मंडल आयुक्त कार्यालय में जमा कराना अनिवार्य होगा।

मतदान का तरीका: मतपत्र पर वरीयता दर्ज करने के लिए केवल उपलब्ध कराए गए बैंगनी स्केच पेन का ही प्रयोग करना होगा। मतदाता अपनी पसंद के प्रत्याशी के सामने

अंकों में '1' लिखें। नाम, हस्ताक्षर, अंगुठा निशान या क्रॉस का निशान लगाने से मतपत्र अमान्य हो सकता है।

मतगणना समय: मतगणना निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आगामी चरणों में प्रातः 8:00 बजे से शुरू होगी और प्रक्रिया पूर्ण होने तक जारी रहेगी।

जिलाधिकारी मनीष बंसल ने सभी प्रत्याशियों और उनके प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि वे निर्वाचन नियमों का पूरी तरह पालन करते हुए, 24 अक्टूबर की शाम तक एजेंटों की नियुक्ति से जुड़ी औपचारिकताएं समय से पूरी कर लें। बैठक के दौरान अपर जिलाधिकारी (नगर)/उप जिला निर्वाचन अधिकारी यमुनाधर चौहान सहित विभिन्न प्रत्याशी एवं उनके अधिकृत प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

छह तहसीलों में सुनी गई महिलाओं की समस्याएं

मिशन शक्ति अभियान के तहत किरावली, सदर, एत्मादपुर, बाह, खेरागढ़ और फतेहाबाद तहसीलों में हुआ आयोजन

पति की मृत्यु के बाद प्रमाण पत्र के लिए भटक रही महिला को मिला प्रशासनिक सहयोग, शिकायतों के त्वरित निस्तारण पर जोर

टीएनएफ टुडे, आगरा।

मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत जनपद आगरा की सभी छह तहसीलों-किरावली, सदर, एत्मादपुर, बाह, खेरागढ़ एवं फतेहाबाद में शुक्रवार को 'पिंक समाधान दिवस' (मिशन शक्ति तहसील दिवस) का आयोजन किया गया। इस विशेष दिवस का मुख्य उद्देश्य महिलाओं की शिकायतों और समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर त्वरित



निस्तारण सुनिश्चित करना है।

तहसील किरावली में उप जिलाधिकारी अभिनव पाठक, नायब तहसीलदार गीतांजलि भारती, वंदना और राजपाल यादव की उपस्थिति में महिलाओं की समस्याएं सुनी गईं। इस दौरान एक महिला ने अपनी समस्या रखते हुए बताया कि उसके पति की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी, लेकिन प्रक्रिया पूरी न होने के कारण उसे मृत्यु प्रमाण पत्र नहीं मिल पा रहा है, जिससे वह सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के लाभ से वंचित है। इस

संवेदनशील प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों ने तत्काल संज्ञान लिया और महिला का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए आवश्यक सहयोग प्रदान करते हुए जल्द निस्तारण के निर्देश दिए।

जिला प्रोबेशन अधिकारी के निर्देशन में 'हब फॉर एंगवरमेंट ऑफ वूमेन' की टीम द्वारा महिलाओं को शासन की विभिन्न जनहितकारी योजनाओं से जोड़ने और उनकी व्यक्तिगत व पारिवारिक समस्याओं का समाधान कराने लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

टीएनएफ टुडे, आगरा।

उत्तर प्रदेश विधान परिषद द्विवार्षिक निर्वाचन-2026 के अंतर्गत आगरा खंड स्नातक एवं शिक्षक निर्वाचन को निष्पक्ष, पारदर्शी और सकुशल संपन्न कराने के लिए सूरसदन प्रेक्षागृह में मतदान कार्मिकों का द्वितीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी मनीष बंसल की गरिमामयी उपस्थिति में हुए इस प्रशिक्षण के दौरान पीठासीन अधिकारियों और प्रथम, द्वितीय व तृतीय मतदान अधिकारियों (P-1, P-2, P-3) को मतदान प्रक्रिया के हर चरण का व्यावहारिक अभ्यास कराया गया। जिलाधिकारी ने कार्मिकों को



निर्देशित किया कि विधान परिषद चुनाव लोकसभा या विधानसभा चुनावों से भिन्न होते हैं, जहाँ ईवीएम के स्थान पर मतपत्र (Ballot Paper) और मतपेटिका (Ballot Box) का उपयोग किया जाता है। उन्होंने सभी कर्मियों को निर्देश दिए कि वे

मतदान प्रक्रिया की हर बारीकी को समझें और निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि निर्वाचन सामग्री की सुरक्षा और उसके रखरखाव में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी तथा सामग्री गुप्त होने

22 अक्टूबर को टूंडला रोड स्थित मंडी समिति से रवाना होगी पोलिंग पार्टियां, 23 अक्टूबर को होगा मतदान

पर संबंधित अधिकारी पर सख्त कार्रवाई होगी।

प्रशिक्षण के दौरान मुख्य बातें निम्नलिखित रही:

-रवानगी और स्थल: सभी पोलिंग पार्टियां 22 अक्टूबर 2026 को प्रातः 10:30 बजे तक मंडी समिति, टूंडला रोड पर निर्धारित निर्वाचन सामग्री के साथ अनिवार्य रूप से उपस्थित होंगी। -मतदान तिथि: आगामी 23 अक्टूबर 2026 को प्रातः 8:00 बजे से मतदान प्रारंभ होगा। -पहचान पत्र: मतदाताओं को

मतदान के लिए अपना मतदाता फोटो पहचान पत्र या आयोग द्वारा निर्धारित वैकल्पिक दस्तावेज (जैसे आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, पासपोर्ट, यूडीआईडी कार्ड आदि) दिखाने होंगे।

-सामग्री जमा करना: मतदान समाप्ति के बाद सभी मतपेटिकाओं और प्रयुक्त-अपर्युक्त सामग्री को पूरी सुरक्षा के साथ निर्धारित स्थल पर समय से जमा कराना अनिवार्य होगा।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी/नोडल अधिकारी अमित कुमार, अपर जिलाधिकारी (नगर)/उप जिला निर्वाचन अधिकारी यमुनाधर चौहान सहित अन्य संबंधित अधिकारी और मास्टर ट्रेनर्स उपस्थित रहे।

नशे में ट्रेलर चालक की करतूत, एक्सप्रेसवे पर अचानक ब्रेक से कंटेनर भिड़ा

फतेहाबाद। आगरा लखनऊ एक्सप्रेसवे पर शुक्रवार की रात शराब के नशे में ट्रेलर चालक ने अचानक से ब्रेक लगा दिए पीछे आ रहा कंटेनर टकरा गया। हादसे में ट्रेलर चालक घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस व यूपीडी की टीम ने घायलों को उपचार के लिए सीएचसी फतेहाबाद भेज दिया, प्राथमिक उपचार के बाद आगरा पंर कर दिया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार की रात 12:40 बजे के करीब खाली ट्रेलर चालक बबलू यादव पुत्र रामचंद्र यादव निवासी झुनकुनिया थाना खुरारी जिला गोंडा चला रहा था जो गाजियाबाद से गोरखपुर जा रहा था। ट्रेलर चालक शराब के नशे में होने के कारण थाना डौकी क्षेत्र आगरा लखनऊ एक्सप्रेस 9.800 पर अचानक से ब्रेक लगा दिए पीछे से कंटेनर चालक राकेश पाल पुत्र मान सिंह निवासी गांव बगियाहार थाना सीरिख जिला कन्नौज जो दिल्ली से गुवाहाटी ओप्लो कंपनी के मोबाइल लेकर जा रहा था पीछे टकरा गया। जिससे कंटेनर क्षतिग्रस्त हो गया। हादसे में ट्रेलर चालक घायल हो गया और ट्रेलर चालक शराब के नशे में होने के कारण उतरते समय सड़क पर गिर गया। जिससे उसके गिर में चोट लग गई। जानकारी पर पुलिस व यूपीडी की टीम मौके पर पहुंची और घायल चालक को उपचार के लिए सीएचसी फतेहाबाद में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद एसएन मेडिकल कॉलेज आगरा भेज दिया गया।

रंगमंच का पर्दा गिराकर विरासत छोड़ गए थे विनय पतसरिया

टीएनएफ टुडे, आगरा।

रंगमंच का पर्दा जब ऊपर उठता है तो किसी विषय या समस्या को नाटकीय ढंग से मंचित होते हुए देखने का सुअवसर दर्शकों को मिलता है। और जब रंगमंच का पर्दा नीचे गिरता है तो दर्शकों के मन में कई तरह के झकझोरने वाले सवाल पैदा करते हुए कुछ करने के लिए उद्बेलित कर देता है। यही रंगमंच की एक खास बात रही है। रंगमंच की इसी खासियत का मुखर होकर अहसास करा दिया करते थे, रंगकर्मी स्व. विनय पतसरिया द्वारा निर्देशित नाटक। जिनकी कि आज तृतीय पुष्प तिथि है। आज ही के दिन तीन बरस पहले 17 अक्टूबर 2023 में रंगमंच का पर्दा गिराकर एक विरासत छोड़ गए थे विनय पतसरिया। दुनिया से विदाई लेने से पहले एक बार फिर उन्होंने आखिरी यादगार शो किया था नाटक गंधे की बारात का। वह हिंदी रंगमंच पर कड़े अनुशासन, परफॉर्मेंस में परफेक्शन, कलाकारों के सटीक चयन द्वारा नाटक को इतना प्रभावशाली बना देते थे कि उनके नाटकों के शो हाउसफुल रहते थे। उन्होंने हिंदी रंगमंच पर प्रभावी मंचनों से कलाप्रेमियों के दिलों में एक खास जगह बनाई। नौजवानों को उनके



व्यक्तित्व-कृतित्व से बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। अग्रणी रंगकर्मियों में शुमार वरिष्ठ अधिवक्ता विनय पतसरिया किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। वह पांच जुलाई 1960 में आगरा के पुनियापाड़ा मौहल्ले स्व.चैतन्य स्वरूप शर्मा और स्व. शांति शर्मा के मध्यवर्गीय परिवार में जन्मे थे। परिवार में उनके भाई स्व.विष्णु स्वरूप शर्मा, विनोद भारद्वाज, विपिन बिहारी शर्मा, बहिनें ऊषा शर्मा एवं स्व.मंजू शर्मा का बड़ा परिवार था। वर्तमान में परिवार में पत्नी डॉ. रेखा पतसरिया और दो बेटियां भी हैं। डॉ. रेखा पतसरिया आगरा कॉलेज की प्राचार्य रही हैं।

हालांकि विनय पतसरिया का पैतृक गांव मथुरा स्थित शेरगढ़ है। लेकिन उनकी जन्मस्थली और कर्मस्थली दोनों आगरा ही रहा। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा राजकीय आदर्श विद्यालय से प्राप्त की। माध्यमिक शिक्षा राजकीय इंटर

कॉलेज से प्राप्त की थी। उसके बाद में उन्होंने बीए और एलएलबी आगरा कॉलेज से किया था।

आगरा कॉलेज में पढ़ते वक्त वह छात्र राजनीति से भी जुड़े रहे। आगरा कॉलेज की साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में वह बड़-चढ़कर हिस्सा लिया करते थे। वाकपटुता के धनी विनय पतसरिया ने बाद-विवाद प्रतियोगिताओं में कॉलेज स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक प्रतिभा का परचम लहरा कर वह पुरस्कृत हुए। लॉ करने के बाद उन्होंने कुछ समय कलेक्ट्रेट में स्व. द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी के कुशल निर्देशन में प्रैक्टिस शुरू की। उसके बाद दीवानी में प्रैक्टिस करने लगे और ता-उम्र वहीं से जुड़े रहे। वहीं आगरा बार कलेक्ट्रेट के सचिव के पद पर रहते हुए बार हॉल में लाइब्रेरी सहित कई ठोस काम अधिवक्ता के करवाए। लीगल

गंव संचालन और रंगमंच के क्षेत्र में फर्श से अर्थ को छुआ था आकर्षक व्यक्तित्व और कृतित्व के मालिक विनय पतसरिया ने

कंसल्टेंट के तौर पर डाबर ग्रुप एवं शारदा ग्रुप से जुड़े थे। उनको हिंदी रंगमंच के पुरोधा डॉ. राम गोपाल सिंह चौहान के मार्गदर्शन में नाटकों में पहले अभिनय और बाद में निर्देशन का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ, जो बाद में उनकी खास पहचान बन गया। सन 1980 में उन्होंने रंगमंच पर अपनी शुरुआत की। उनका पहला नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' था जिसका निर्देशन अनिल चौहान ने किया था। उसके बाद 'कथा एक कंस की', 'अंधा युग', 'सिंहासन खाली है', 'नई समस्या', 'लॉटरी', 'विषपावी', 'खलदेवा की जय जयकार', 'गंधे की बारात', में प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

रंगमंच पर सशक्त अभिनय की छाप छोड़ने के बाद उन्होंने नाट्य निर्देशन के क्षेत्र में भी कदम रखे। उन्होंने 'मि. अभिमन्यु' नाटक का निर्देशन किया था। उसके बाद उन्हीं नाटकों का निर्देशन भी किया, जिनमें कभी अभिनय किया करते थे। विनय पतसरिया ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रमों से भी जुड़े रहे। ध्वनि प्रकाश

कार्यक्रम 'सुलहकुल' में अभिनय किया। इसके बाद खुद कई ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रमों का निर्देशन करते हुए प्रभावी प्रस्तुतिकरण किया। इनमें 'जश्न-ए-आजादी' कार्यक्रमों की श्रृंखला के तहत 'ए वतन तेरे लिए', सूरसदन प्रेक्षागृह में 'साध्वी चंदनबाला', 'महावीर स्वामी', ताजखेमा पर 'अकबर', 'कृष्ण' आदि प्रमुख हैं। वह ताज महोत्सव से भी बतौर सांस्कृतिक संयोजक जुड़े रहे थे। वह फिल्म और टेलीविजन से भी जुड़े रहे। वासु भगनानी की फिल्म 'तेरा जादू चल गया' में कला निर्देशक के रूप में काम किया, कृष्ण राघव के निर्देशन में दूरदर्शन के टीवी सीरियल 'मछलीघर' और शरतचंद्र के उपन्यास में आधारित 'शेष प्रश्न' में कला निर्देशन और अभिनय दोनों को अंजाम दिया।

मंच संचालन में भी उनका कोई जवाब नहीं था, उन्होंने आगरा के तमाम बड़े कार्यक्रमों में अपनी मंच संचालन से अमिट छाप छोड़ी थी। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव, अखिलेश यादव और वर्तमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आगरा में कार्यक्रमों में मंच संचालन के दायित्व बखूबी निभाए।

अधिवक्ता से मारपीट पर भड़का आक्रोश, गिरफ्तारी के लिए एसडीएम को घेरा आरोपियों की गिरफ्तारी न होने पर अधिवक्ताओं ने जताया विरोध



टीएनएफ टुडे, फतेहाबाद।

साथी अधिवक्ता के साथ मारपीट के मामले में कार्रवाई की मांग

आरोपियों पर हत्या की धमकी देने का भी आरोप

न्यायिक कार्य का बहिष्कार कर कलमबंद हड़ताल

आरोपी लगातार अधिवक्ता की हत्या करने की धमकी दे रहे हैं। जिसको लेकर अधिवक्ता में भारी रोष व्याप्त है। वहीं अधिवक्ताओं ने 16 अक्टूबर आरोपियों की गिरफ्तारी न होने चलते न्यायिक कार्य का बहिष्कार कर कलम बंद हड़ताल पर है। इस दौरान दिनेश पाठक,जयपाल सिंह,विजेंद्र तोमर, लक्ष्मी नारायण , विष्णु गुर्जर ,देवेंद्र पाठक,लक्ष्मी नारायण शर्मा, रामबाबू भदोरिया सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ता मौजूद थे।

टीएनएफ टुडे मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड के लिए **धीरज शर्मा** द्वारा श्रीराम मार्केट फूलपुर अड़डा, देवरी रोड, फतेहाबाद आगरा से प्रकाशित एवं मुद्रक पवन पाठक द्वारा इम्प्रेसेशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड गुरु का ताल सिकंदरा रोड आगरा से मुद्रित।

संपादक: धीरज शर्मा, फोन: 9412359817, E mail: tnftoday@gmail.com वेबसाइट: www.tnftoday.com

पंजीयन नं. UPHIN/25/A3702 (संपादक इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.पी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।)

सम्पादकीय

नवरात्रि, आद्यशक्ति की पावन साधना, नारी शक्ति का सम्मान और सनातन चेतना का महान पुनर्जागरण

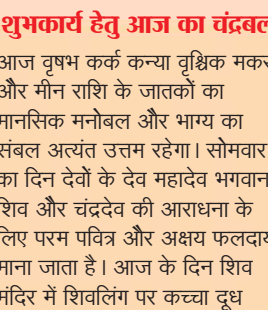
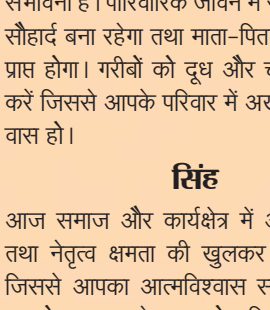
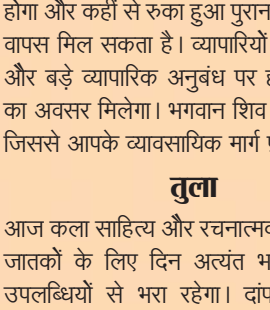
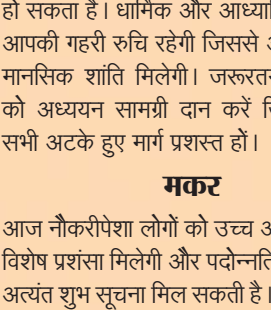
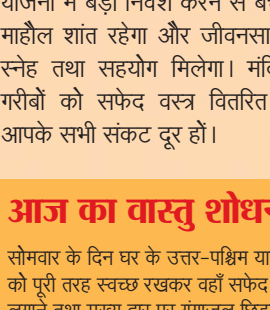
पावन शारदीय नवरात्रि का यह परम पवित्र अवसर केवल नौ दिनों का कोई साधारण धार्मिक उत्सव मात्र नहीं है बल्कि यह आद्यशक्ति माँ जगदम्बा की भक्ति, कठोर संयम, जप-तप और आत्म-अनुशासन का महान पर्व है। हमारी अनन्त सनातन संस्कृति में नवरात्रि का प्रत्येक दिन मानव मन की सुप्त चेतना को जगाने, अंतःकरण के विकारों का नाश करने तथा जीवन में सात्विक ऊर्जा और धर्म का संचार करने का दिव्य कालखंड माना गया है। आज के इस भौतिकतावादी और अति-आधुनिक भागदौड़ भरे युग में जब मनुष्य मानसिक तनाव, एकाकीपन और उपभोक्तावादी अंधी दौड़ में बुरी तरह उलझा हुआ है तब यह महापर्व हमें ठहरकर अपनी सांस्कृतिक गरिमा और आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ने का महान संदेश देता है। घटना के इस गूढ़ और आध्यात्मिक पहलू पर गहराई से विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि माँ दुर्गा के नौ रूपों की आराधना वास्तव में समाज में नारी शक्ति के सर्वोच्च सम्मान, करुणा और न्याय की स्थापना का दिव्य प्रतीक है। हमारे पावन धर्मग्रंथों में उल्लिखित नवदुर्गा के प्रत्येक स्वरूप में संपूर्ण ब्रह्मांड के कल्याण, आसुरी प्रवृत्तियों के विनाश और सत्य की रक्षा की अद्भुत सामर्थ्य तथा दिव्य प्रेरणा समाहित है। पर्व की इस पावन गरिमा और वैदिक पवित्रता को बनाए रखने के लिए यह अत्यंत अनिवार्य है कि हम नवरात्रि जैसे महान अनुष्ठान को केवल बाहरी आडंबर, शोर-शराबे या फूहड़ मनोरंजन का साधन बनने से बचाएं। आधुनिक शिक्षा और तकनीक के इस दौर में अपनी भावी युवा पीढ़ी को नवरात्रि के वास्तविक आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और सामाजिक महत्व से अवगत कराना समय की सबसे बड़ी और ऐतिहासिक आवश्यकता बन चुका है। तथापि केवल मंदिर-मंडपों तक सीमित रहकर कर्मकांड करने के बजाय हमें अपने व्यावहारिक जीवन में भी नारी जाति का पूर्ण आदर करने और समाज से दहेज तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी क्रूर्रितियों को जड़ से समाप्त करने का दृढ़ संकल्प लेना होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम नवरात्रि के इस पावन उत्सव को पूर्ण सात्विकता, पवित्रता और अगाध श्रद्धा के साथ मनाएं ताकि हमारे परिवारों, संपूर्ण समाज तथा राष्ट्र में शांति, भाईचारे और अखंड समृद्धि का वास हो सके।

अनसुने प्रसंग- क्षेपक कथा

जब भगवान श्री कृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचाने के लिए अपनी उंगली का चीर समर्पित कर दिया था

भक्तमाल और पुराणों के पावन इतिहास में भगवान श्री कृष्ण और माता द्रौपदी के पवित्र भाई-बहन जैसे स्नेह तथा संकट निवारण का यह प्रसंग अत्यंत प्रेरणादायक है। महाभारत के समय जब हस्तिनापुर के राजसभा में दुर्योधन और दुःशासन ने पांडवों को हारने के बाद माता द्रौपदी का अपमान करना चाहा तब धर्म की रक्षा के लिए एक महान परीक्षा का क्षण आ गया था। सरेआम भरी सभा में जब दुःशासन ने द्रौपदी का चीरहरण करना शुरू किया तब पांडव और सभी बड़े ज्ञानी और वीर भी अपनी विवशता के कारण मौन बैठे रहे थे। उस भयंकर संकट के समय जब दुनिया की कोई भी शक्ति द्रौपदी की रक्षा करने में असमर्थ थी तब उन्होंने अपनी सारी आशा छोड़कर दोनों हाथ ऊपर उठाकर केवल द्वारकाधीश भगवान श्री कृष्ण को पुकारा था। उसी क्षण द्वारका में बैठे भगवान श्री कृष्ण ने अपने भक्त की आर्त पुकार को सुन लिया और वे बिना एक पल भी गंवाए अपनी राजसभा से दौड़ पड़े। जब वे दौड़ रहे थे तब मकर संक्रांति के समय गन्ने का छिलका छीलते समय सुदर्शन चक्र चलाते वक्त भगवान की तर्जनी उंगली में हल्की सी चोट लग गई थी और उससे रक्त की बूंद टपकने लगी थी। माता रुक्मिणी ने जब यह देखा तब उन्होंने तुरंत अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर भगवान की उंगली पर बांधना चाहा किंतु भगवान ने कहा कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

द्रौपदी की रक्षा का वह परम पवित्र क्षण आ चुका था इसलिए भगवान ने अपनी उस घायल उंगली पर बांधने के लिए द्रौपदी की साड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा यानी चीर मांग लिया था। द्रौपदी ने अपनी संकट की घड़ी में जब भगवान की उंगली से खून बहते देखा तब उन्होंने अपनी कीमती साड़ी का एक छोर फाड़कर भगवान की उंगली पर तुरंत बांध दिया था। उस छोटे से उपकार और अटूट प्रेम के बदले में करुणा निधान भगवान श्री कृष्ण ने हस्तिनापुर की सभा में द्रौपदी की साड़ियों को अंतहीन रूप से बढ़ाते चले गए। दुःशासन खींच-खींचकर थक गया और मूर्छित होकर गिर पड़ा किंतु भगवान की कृपा से द्रौपदी का चीर कभी समाप्त नहीं हुआ और उनकी लाज पूरी तरह सुरक्षित रही। यह पावन प्रसंग हमें यह गहरी सीख देता है कि संकट के समय जो भक्त पूरी श्रद्धा के साथ भगवान को पुकारता है, प्रभु उसकी रक्षा के लिए ब्रह्मांड के किसी भी कोने से दौड़े चले आते हैं।

सितारों की चाल : आपका भविष्यफल	दिनांक 19 अक्टूबर 2026 सोमवार
कल का दिन कैसा होगा? इसकी तैयारी आज ही करें! प्रिय पाठकों, TNF टुडे हमेशा आपको सुविधा को सर्वोपरि रखता है। इसी अंशेय से हम आपको एक दिन अधिम (Advance) राशिफल प्रदान कर रहे हैं ताकि आप अपने महत्वपूर्ण कार्यों, बैठकों और यात्राओं की योजना आज रात ही बना सकें। सितारों की चाल की पहली सीढ़ी है।	
 मेघ आज कार्यक्षेत्र में आपको अपनी मेहनत का पूरा सकारात्मक परिणाम मिलेगा और वरिष्ठ अधिकारियों का विशेष सहयोग प्राप्त होगा। आर्थिक मामलों में किए गए पुराने निवेश से बड़ा लाभ मिलने की पूरी संभावना बन रही है। भगवान शिव को बेलपत्र अर्पित करें जिससे आपके सभी संकट दूर हों।	 वृष आज आपकी राशि पर चंद्रमा की अनुकूल स्थिति के कारण व्यापार में कोई बड़ा और लाभदायक सौदा तय हो सकता है। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा पर जाने का सुंदर अवसर मिलेगा जिससे मन प्रसन्न रहेगा। किसी जरूरतमंद को सफेद वस्तु दान करें जिससे आपके भाग्य के द्वार खुलेंगे।
 शुभकार्य हेतु आज का चंद्रबल आज वृषभ कर्क कन्या वृश्चिक मकर और मीन राशि के जातकों का मानसिक मनोबल और भाग्य का संबल अत्यंत उत्तम रहेगा। सोमवार का दिन देवों के देव महादेव भगवान शिव और चंद्रदेव की आराधना के लिए परम पवित्र और अक्षय फलदायी माना जाता है। आज के दिन शिव मंदिर में शिवलिंग पर कच्चा दूध और बेलपत्र अर्पित करने तथा महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने से जीवन के सभी कष्ट दूर होते हैं और मानसिक शांति की प्राप्ति होती है।	 कर्क आज भूमि भवन या संपत्ति से जुड़ा कोई पुराना विवाद आपसी समझौते से सुलझने की पूरी संभावना है। पारिवारिक जीवन में सुख शांति और सौहार्द बना रहेगा तथा माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त होगा। गरीबों को दूध और चावल का दान करें जिससे आपके परिवार में अखंड समृद्धि का वास हो।
	 सिंह आज समाज और कार्यक्षेत्र में आपके पराक्रम तथा नेतृत्व क्षमता की खुलकर सराहना होगी जिससे आपका आत्मविश्वास सातवें आसमान पर होगा। आय के नए स्रोत विकसित होने से आपका आर्थिक पक्ष पहले से अधिक मजबूत होगा। मंदिर में गंगाजल से अभिषेक करें जिससे
	 तुला आज कला साहित्य और रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़े जातकों के लिए दिन अत्यंत भाग्यशाली और उपलब्धियों से भरा रहेगा। दाम्पत्य जीवन में मधुरता बढ़ेगी और जीवनसाथी की सलाह से कोई बड़ा वित्तीय लाभ होगा। किसी जरूरतमंद को भोजन कराएं जिससे आपके जीवन में सुख
	 धनु आज मित्रों और संबंधियों के सहयोग से कोई बड़ा रुका हुआ वित्तीय कार्य आसानी से संपन्न हो सकता है। धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों में आपकी गहरी रुचि रहेगी जिससे आपको असीम मानसिक शांति मिलेगी। जरूरतमंद विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री दान करें जिससे आपके सभी अटके हुए मार्ग प्रशस्त हों।
	 मकर आज नौकरिपेशा लोगों को उच्च अधिकारियों की विशेष प्रशंसा मिलेगी और पदोन्नति से जुड़ी कोई अत्यंत शुभ सूचना मिल सकती है। पुराने कर्ज से मुक्ति मिलने के योग बहुत मजबूत हैं। सोमवार का व्रत रखें जिससे आपके करियर की सभी बाधाएं समाप्त होंगी।

○ बुज खंडेलवाल

जब हर हाथ में मोबाइल हो, हर मोबाइल न्यूजरूम बन जाए और हर सोशल मीडिया वाला खुद को पत्रकार बताने लगे, तो असली पत्रकार की पहचान कौन करेगा? क्या कैमरा उठाना ही काबिलियत है? क्या माइक पकड़कर चिल्लाने से पत्रकारिता आ जाती है? क्या किसी अफसर को धमकाते ही प्रेस की धौंस जमाई जा सकती है? और क्या पत्रकार होने का दावा करते ही खास सुरक्षा और सुविधाओं का पट्टा मिल जाना चाहिए?

सवाल तीखे हैं, मगर वक्त की जरूरत हैं। सुप्रीम कोर्ट ने हाल में पत्रकारों की सुरक्षा से जुड़े एक मामले की सुनवाई के दौरान इसी पेचीदा मुद्दे पर गौर किया। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची ने डिजिटल दौर में पत्रकार की पहचान तय करने की मुश्किलों की ओर इशारा किया।

वरिष्ठ वकील इंदिरा जयसिंह ने कहा कि जनहित के मुद्दे उठाने वाले स्वतंत्र पत्रकारों के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए। सरकारी मान्यता न होने से उनकी आवाज कमजोर नहीं पड़नी चाहिए।

दूसरी तरफ, साॅलिसिटर जनरल ने भी जागरूक सवाल उठाया। आज मोबाइल उठाइए, वीडियो बनाइए और खुद को पत्रकार घोषित कर दीजिए। न डिग्री, न तजुर्बा, न जवाबदेही। बस बन गए पत्रकार!

अदालत ने इस मसले पर विस्तार से विचार करने की जरूरत बताई है। अभी कोई अंतिम परिभाषा तय नहीं हुई है। लेकिन सवाल अपनी जगह खड़ा है। आखिर पत्रकारिता है क्या? पत्रकारिता सिर्फ माइक, कैमरा और



सोशल मीडिया पोस्ट का खेल नहीं है। इसके लिए जानकारी चाहिए, हुनर चाहिए और तथ्यों की जांच करने का सलीका चाहिए। ईमानदारी, समझ और जनता के प्रति जवाबदेही भी जरूरी हैं।

मोबाइल एक औजार है, योग्यता का प्रमाणपत्र नहीं। ऊंची आवाज हुनर की गारंटी नहीं। और प्रेस कार्ड कोई जादुई छड़ी नहीं, जिसे घुमाते ही सारे नियम खत्म हो जाएं। अफसोस, आज पत्रकारिता का चेहरा कई जगह बिगड़ता नजर आता है। खबर पीछे छूट रही है, तमाशा आगे निकल रहा है। टीआरपी की दौड़ में सच कई बार दम तोड़ देता है।

जियोस्टार के उपाध्यक्ष उदय शंकर ने भी चिंता जताई है कि पत्रकारिता की पुरानी पहचान खत्म होती जा रही है। न्यूजरूम अब खबरों की अहमियत से ज्यादा उनकी पहुंच और रेटिंग को तवज्जो देने लगे हैं।

पूर्व संपादक एन. राम भारतीय टीवी समाचार चैनलों की गुणवत्ता पर तीखी टिप्पणी कर चुके हैं। राजदीप सरदेसाई ने भी पत्रकारिता के नैतिक पतन और उसके कारोबारी मॉडल पर सवाल उठाए हैं। बात कड़वी है, मगर सच से मुंह मोड़ने से क्या फायदा? पब्लिक कमेंटेटर प्रोफ पारस नाथ

सिरदर्द: स्वयं उपचार नहीं, सही पहचान और उचित चिकित्सा जरूरी

○ डॉ. दीपक गोस्वामी

शरीर जब संकेत देता है, हम अक्सर उसे सुनने के बजाय गोली खाकर चुप करा देते हैं। सिरदर्द हुआ—गोली निगली, कुछ राहत मिली और हम फिर उसी दिनचर्या में लौट गए, जिसने शायद परेशानी बढ़ाई थी। मानो स्वास्थ्य नहीं, दर्द को चुप कराने की प्रतियोगिता चल रही हो। लेकिन सिरदर्द हमेशा मामूली नहीं होता और हर बार उसका कारण जीवनशैली भी नहीं होती। यह तनाव, माइग्रेन, नींद की कमी, निर्जलीकरण, अनियमित भोजन, आँखों पर दबाव, गर्दन की मांसपेशियों में खिंचाव अथवा किसी दूसरी स्वास्थ्य समस्या से जुड़ा हो सकता है। मस्तिष्क के ऊतक स्वयं सामान्य रूप से दर्द महसूस नहीं करते, लेकिन उसके आसपास की झिल्लियाँ, रक्तवाहिनियाँ और तंत्रिकाएँ दर्द का अनुभव करा सकती हैं। इसलिए सिरदर्द की सही पहचान उसके लक्षणों और परिस्थितियों को समझकर ही की जा सकती है।

मोबाइल की गर्दन, मन का बोझ

घंटों गर्दन झुकाकर मोबाइल देखना, लगातार एक ही मुद्रा में बैठना और आँखों को विश्राम न देना कुछ लोगों में सिरदर्द बढ़ा सकता है। मोबाइल की बैटरी कम होते ही हम चार्जर खोजते हैं, लेकिन अपनी शारीरिक ऊर्जा घटने पर भी काम रोकना जरूरी नहीं समझते। शारीरिक थकान के साथ मानसिक दबाव भी परेशानी बढ़ा सकता है। रोजगार की चिंता, कर्ज की किरस्तें, पारिवारिक तनाव, कार्यस्थल का दबाव और भविष्य की अनिश्चितता मन को लगातार व्यस्त रखते हैं। पर्याप्त विश्राम न मिले तो तनाव और थकान का असर शरीर पर भी दिखाई दे सकता है। फिर भी हर सिरदर्द को तनाव और हर माइग्रेन को दबे हुए गुस्से का परिणाम मानना गलत है। मन और शरीर जुड़े हैं, लेकिन बीमारी की पहचान अनुमान से नहीं, उचित चिकित्सकीय मूल्यांकन से होती है। राहत का रास्ता दिनचर्या से भी गुजरता है



पहला—नींद, भोजन और पानी। पर्याप्त नींद लें, नियमित भोजन करें और अपनी जरूरत के अनुसार पानी पिएँ। लंबे समय तक भूखे रहना, नींद की कमी और निर्जलीकरण कुछ लोगों में सिरदर्द को उकसा सकते हैं।

दूसरा—स्क्रीन से विराम। लंबे समय तक मोबाइल या कंप्यूटर पर काम करते हुए बीच-बीच में दूर देखें, कंधों को सहजता से हिलाएँ और गर्दन की आरामदायक मुद्रा बनाए रखें। दर्द बढ़ने पर जबरन व्यायाम न करें।

तीसरा—तनाव का प्रबंधन। कुछ समय शांत बैठना, सहज श्वास लेना, ध्यान करना या किसी भरोसेमंद व्यक्ति से मन की बात साझा करना उपयोगी हो सकता है। रात को अगले दिन के जरूरी काम लिख लेने से भी चिंताओं को व्यवस्थित करने में मदद मिल सकती है।

चौथा—दर्द की डायरी। सिरदर्द कब हुआ, कितनी देर रहा, कितना तेज था, नींद और भोजन की स्थिति कैसी थी तथा उससे पहले कोई विशेष परिस्थिति थी या नहीं—इसे लिखें। इससे संभावित कारणों को पहचानने और चिकित्सक को सही जानकारी देने में सहायता मिल सकती है।

जीवनशैली में सुधार उपयोगी है, लेकिन इसे हर सिरदर्द का इलाज नहीं समझना चाहिए। बार-बार दर्द होने, उसकी प्रकृति बदलने या दैनिक काम प्रभावित होने पर चिकित्सकीय सलाह लें।

गोली दुश्मन नहीं, गलत इस्तेमाल जोखिम है

दर्दनिवारक दवाएँ उचित परिस्थिति में राहत देती हैं। समस्या तब होती है, जब बिना सलाह बार-बार दवा ली जाती है या उसका इस्तेमाल लगातार बढ़ता जाता है। कुछ दवाओं के अत्यधिक सेवन से सिरदर्द और बढ़ सकता है। इसलिए यदि सप्ताह में कई दिन दवा की जरूरत पड़ रही है, तो चिकित्सक से परामर्श करना जरूरी है। कुछ चेतावनी संकेतों में घरेलू उपायों के भरोसे बिल्कुल न रहें। अचानक शुरू हुआ अत्यंत तेज सिरदर्द, बुखार के साथ गर्दन अकड़ना, बेहोशी, भ्रम, शरीर के किसी हिस्से में कमजोरी, बोलने में कठिनाई, दृष्टि में अचानक बदलाव या सिर की चोट के बाद दर्द होने पर तत्काल चिकित्सा सहायता लें। पचास वर्ष की आयु के बाद पहली बार नया सिरदर्द होने पर

यूनेस्को का नजरिया इस बहस में अहम है। वह पत्रकारिता के लिए कोई कठोर शैक्षणिक योग्यता, अनिवार्य लाइसेंस या पत्रकारों की तय संख्या निर्धारित नहीं करता। उसका जोर इस बात पर है कि कौन जनहित में जानकारी जुटाता है, तथ्यों की पड़ताल करता है और जनता तक खबर पहुंचाता है। इसलिए स्वतंत्र पत्रकारों, फ्रीलांसरों, ब्लॉगरों और नागरिक पत्रकारों को एक झटके में खारिज नहीं किया जा सकता। उनका काम, अनुभव और आचरण भी मायने रखते हैं।

खासकर गांवों और दूरदराज के इलाकों में कई पत्रकार बेहद सीमित साधनों के बीच काम करते हैं। न बड़ा दफ्तर, न चमचमाती गाड़ी, न भारी-भरकम पहचान पत्र। फिर भी वे भ्रष्टाचार उजागर करते हैं, सरकारी लापरवाही सामने लाते हैं और उन लोगों की आवाज बनाते हैं जिन्हें अक्सर कोई सुनने वाला नहीं मिलता।

कई बार बड़े मीडिया संस्थान जिन खबरों से मुंह फेर लेते हैं, वही खबरें छोटे कस्बों के पत्रकार सामने लाते हैं।

ऐसे पत्रकारों को सिर्फ डिग्री या सरकारी मान्यता के अभाव में खारिज करना अन्याय होगा। असली कसौटी उनका काम, उनकी विश्वसनीयता और उनका आचरण होना चाहिए।

लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि हर किसी को खुली छूट दे दी जाए।

कर्नाटक के एक सीनियर मीडिया प्रशिक्षक बताते हैं, "कुछ लोग पत्रकारिता की आड़ में वसूली करते हैं। व्यापारियों को डराते हैं, अधिकारियों को धमकाते हैं और आम नागरिकों को ब्लैकमेल करते हैं। उनके लिए कैमरा सच दिखाने का जरिया नहीं, दबाव बनाने का हथियार है। ऐसे लोगों से सावधान रहने की जरूरत है। वे पत्रकारिता की इज्जत पर बट्टा लगाते हैं। चंद फर्जी पत्रकार पूरे पेशे को बदनाम कर

देते हैं।"

यहां एक बात साफ होनी चाहिए। पत्रकारिता की स्वतंत्रता का मतलब मनमानी नहीं है। अधिकार के साथ जिम्मेदारी भी आती है। सवाल पूछना पत्रकार का हक है, लेकिन किसी को डराकर अपना उल्लूू सीधा करना अपराध की श्रेणी में आ सकता है।

इसलिए समाधान सरकारी लाइसेंस बांटने या पत्रकारों पर राजनीतिक शिकंजा कसने में नहीं है। जरूरत ऐसी स्वतंत्र व्यवस्था की है, जो पेशेवर पहचान, रিপোর্टिंग के अधिकार और विशेष सुविधाओं के बीच फर्क समझे। प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया इसमें पहल करे। वकील, डॉक्टर, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स, अन्य पेशेवर लोग, कहीं न कहीं पंजीकृत होते हैं, प्रैक्टिस करने का लाइसेंस मिलता है, तो फिर मीडिया के लोगों को ये व्यवस्था लागू नहीं की जा सकती, कुछ तो पेशेवर मापदंड होने ही चाहिए।

आचार संहिता हो। शिकायतों की निष्पक्ष जांच हो। गलत काम साबित होने पर उचित कार्रवाई हो। लेकिन किसी पत्रकार की पहचान केवल इसलिए न छीनी जाए कि उसकी खबर सरकार या किसी ताकतवर व्यक्ति को पसंद नहीं आई।

आखिर लोकतंत्र में पत्रकार का काम सत्ता की तारीफ में कसीदे पढ़ना नहीं है। उसका काम सवाल पूछना है। जरूरत पड़ने पर असुविधाजनक सच सामने लाना है। सरकार पत्रकार तय करने बैठेगी, तो कल खबरों की जगह फरमान छपेंगे। बोलने का अधिकार हर नागरिक को है। जनहित में जानकारी जुटाने और उसे लोगों तक पहुंचाने की आजादी भी जरूरी है। लेकिन विशेष पेशेवर पहचान और उससे जुड़ी सुविधाओं के लिए विश्वसनीय काम, अनुभव और जिम्मेदारी की कसौटी होनी चाहिए।

भी शीघ्र जाँच कराएँ।

एक छेटी-सी सीख

एक व्यक्ति सिरदर्द से परेशान होकर वेद्य के पास पहुँचा। वेद्य ने पूछा, ‘रात को कितनी देर सोते हो?’ वह बोला, ‘देर से सोता हूँ, सुबह जल्दी उठता हूँ।’ ‘भोजन समय पर करते हो?’ ‘जब काम से फुर्सत मिले।’ ‘और चिंता?’ ‘वह तो चौबीस घंटे साथ रहती है!’ वेद्य मुस्कराया, ‘दवा की जरूरत हो तो लो, लेकिन शरीर से विश्राम छीनकर स्वास्थ्य की अपेक्षा मत करो।’ इस प्रसंग का अर्थ यह नहीं कि सिरदर्द केवल गलत आवतों से होता है। सीख इतनी है कि जहाँ हमारी आदतें स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं, वहाँ सुधार की जिम्मेदारी भी हमारी है। भारतीय जीवन-दृष्टि में संयम, संतुलन और आत्मनिरीक्षण का महत्व रहा है। इसका व्यावहारिक अर्थ है—अपनी सीमाएँ पहचानना, अनान्यक तनाव घटाना और शरीर की जरूरतों की उपेक्षा न करना। हर जिम्मेदारी अकेले उठाना, हर व्यक्ति को प्रसन्न रखना और हर परिस्थिति पर नियंत्रण चाहना मन को थका सकता है। जरूरत पड़ने पर सहायता माँगना कमजोरी नहीं, विवेक है।

निष्कर्ष

सिरदर्द को न अनदेखा करें, न हर बार साधारण मानें। उसके कारण को समझें, नियमित दिनचर्या अपनाएँ और जरूरत पड़ने पर उचित उपचार लें। गोली दर्द कम कर सकती है, स्वस्थ आदतें स्वास्थ्य सँभालने में मदद करती हैं और सही चिकित्सकीय सलाह गंभीर समस्या को पहचानने का रास्ता खोलती है। याद रखिए—स्वास्थ्य केवल दवा पर निर्भर नहीं, लेकिन केवल जीवनशैली के भरोसे भी नहीं छोड़ा जा सकता। दर्द को दबाने से पहले उसे समझिए, स्वयं उपचार करने से पहले सही पहचान और उचित चिकित्सा को प्राथमिकता दीजिए।



दुनिया का सबसे छोटा देश सीलैंड

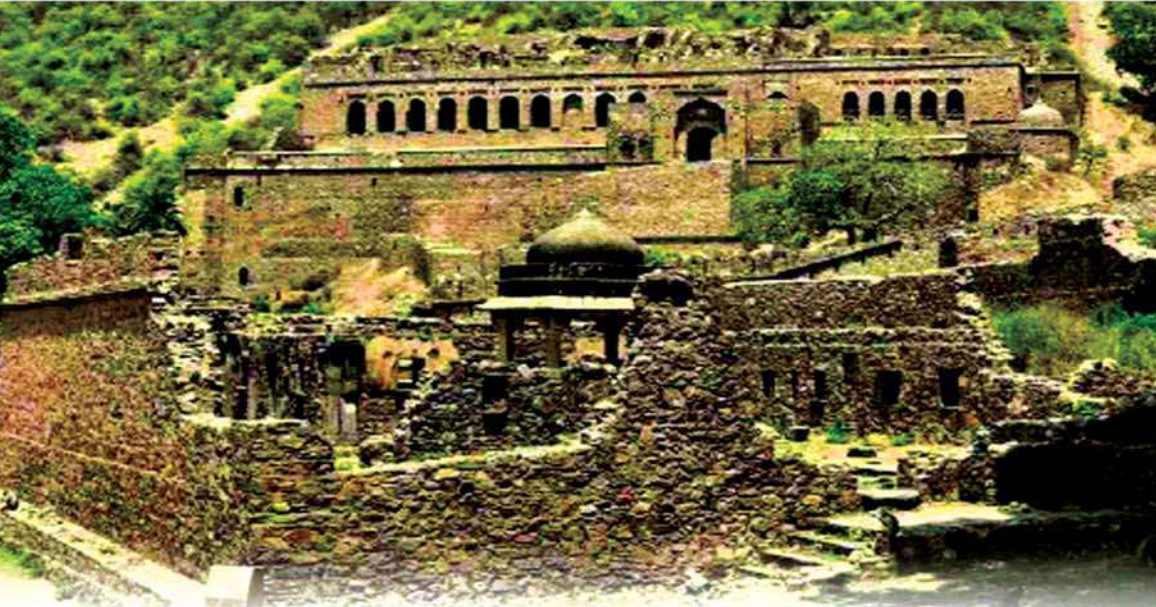
इस देश का नाम है सीलैंड। विश्व का एक बहुत छोटा देश हैं। कोस्ट ऑफ इंग्लैंड से दस किलोमीटर दूर इस नन्हें क्षेत्र को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन सेना के आक्रमण को रोकने के लिए डिजाइन किया गया था। 1967 में पैडी रॉय बेट्स ने इस समुद्री किले पर कब्जा कर लिया और इसे संप्रभु देश घोषित कर दिया। इस देश में जाने के लिए पासपोर्ट भी इश्यू किया गया। जर्मनी ने इस देश में अपना डिप्लोमेट भेजा, इसे देश का दर्जा दिया। 1968 में ब्रिटेन के कोर्ट ने यह निर्णय दिया कि सीलैंड ब्रिटेन के न्यायिक दायरे में नहीं आता है। 1978 में पैडी बेट्स का तख्तापलट एलेक्जेंडर एकेनबाक ने किया, जो खुद को वहां का प्रधानमंत्री कहता था। उस समय बेट्स देश से बाहर थे। बेट्स के बेटे माइकल को एकेनबाक ने कई दिनों तक बन्दी बनाए रखा, उसके बाद नीदरलैंड में उसे छोड़ा गया। बेट्स ने दूसरे देशों से सैनिक सहायता लेकर सीलैंड पर आक्रमण किया और एकेनबाक को बन्दी बना लिया। 1987 में ब्रिटेन ने अपनी समुद्री सीमा को फिर से निर्धारित किया और सीलैंड को अपने क्षेत्र में बताया। लेकिन यह अभी भी संप्रभु देश है।



बिना कुछ खाए भी कई सालों तक जिंदा रह सकता है यह जीव

धरती पर मौजूद हर जीव के पास कुछ खास विशेषताएं होती हैं। कई जीव ऐसे होते हैं जो बिना पानी पीए ही कई सालों तक जिंदा रह सकते हैं, तो वहीं कई जीव ऐसे हैं जो बिना कुछ खाए भी जिंदा रह सकते हैं। आज हम आपको कुछ इसी तरह के दुर्लभ जीव के बारे में बताएंगे, जो कई सालों तक भोजन ही नहीं करता है। सैलामैंडर नामक यह जीव बड़ा ही दुर्लभ है, जो स्लोवेनिया से लेकर क्रोएशिया जैसे बाल्कन देशों में पानी के भीतर मौजूद गुफाओं में पाए जाते हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस जीव की त्वचा और अविकसीत आंखें इन्हें अंधा बनाती हैं। शायद इसी वजह से यह जीव अपने जगह से हिलते नहीं हैं। किसी जीव का अपने स्थान से ना हिलना कोई असामान्य बात नहीं है। कई मामलों में ऐसा देखने को मिला है कि 7 साल से भी अधिक समय होने के बाद भी सैलामैंडर अपने जगह से नहीं हिलते हैं। सैलामैंडर अपना पूरा जीवन पानी के भीतर बीताता है और इसकी उम्र 100 साल की होती है। इसका आवास स्लोवेनिया से लेकर क्रोएशिया जैसे बाल्कन देशों में है। यह दुर्लभ जीव अपनी जगह कई सालों के बाद तब ही बदलता है, जब उसे साथी की तलाश होती है। हंगेरियन नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम के ज्यूडिट वोरोस के मुताबिक भारी बारिश के होने के बाद भी ये जीव बहकर गुफाओं से बाहर आते हैं। इसके बाद ही हम इन्हें देख पाते हैं। अन्यथा इन्हें देखने के लिए हमें गोताखोरी कर गुफा में जाना होता है। गुफा के पानी में मौजूद अंशों को देखकर ही हम यह बता सकते हैं कि वे वहां हैं या नहीं। सैलामैंडर जिन गुफाओं में रहते हैं, वहां भोजन मिलना आसान नहीं है। यह जीव बिना कुछ खाए भी कई वर्षों तक जिंदा रह सकता है। हालांकि सैलामैंडर जब भी सक्षम होते हैं तो छोटे कीड़े-मकोड़े, घोंघे और कीड़ों को खाते हैं।



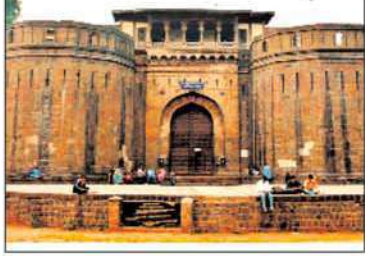
भारत हमेशा से ही अद्भुत कला और संस्कृति का देश रहा है, प्राचीन काल से ही भारत में महान राजाओं का जन्म हुआ है जिन्होंने भारत के राज्यों पर लम्बे समय तक राज किया है। इन महान राजाओं ने भारत में बड़े – बड़े और एक से बढ़कर एक किलो को निर्माण कराया जो सिर्फ कला और संस्कृति तक समिति नहीं थे बल्कि ये सुरक्षा के उद्देश्य से बनाये गये थे। भारत में कई ऐसे किले भी बनाये गये है जिनके पीछे कोई ना कोई रहस्य और डरावनी कहानियां छिपी हुई है। आज हम भारत के सबसे रहस्यमयी किले के बारे में जानते है, जो आज तक इतिहासकारों के लिए एक अनसुलझी पहली बनी हुई है, जबकि कुछ किले इतने डरावने भी है की पर्यटक यहाँ दिन में भी जाने से डरते है।

भानगढ़ किला



राजस्थान के अलवर जिले की अरावली पर्वतमाला में सरिस्का अभ्यारण्य की सीमा पर स्थित भानगढ़ किला भारत के सबसे रहस्यमयी किले में से एक है। यह किला ढलान वाले इलाके में पहाड़ियों के तल पर बसा हुआ है जो देखने में बेहद भयानक लगता है। भानगढ़ किला अलवर शहर का एक बेहद प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है जो अपनी भुतिया किर्सों की वजह से सबसे ज्यादा चर्चा में बना रहता है। भानगढ़ किला यहां होने वाली घटनायों की वजह से इतना ज्यादा फेमस है कि कोई भी इस किले के अंदर अकेला जाने से डरता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण या एएसआई ने इस किले में रात के समय पर्यटकों और स्थानीय लोगों के प्रवेश पर भी रोक लगा रखी है।

शनिवाड़ा फोर्ट



शनिवाड़ा फोर्ट भारत के सबसे डरावने किले में से एक है जिसे 1732 में पेशवा बाजीराव के सम्मान में बनाया गया था। शनिवासरवाड़ा किला पुणे में स्थित है जो अपनी विशाल वास्तुकला के अलावा यहाँ होने वाली कई डरावनी घटनाओ की वजह से भी प्रसिद्ध है। बताया जाता है कि पूर्णिमा की रात को यहाँ अलौकिक गतिविधि बहुत ज्यादा होती है। इन भुतिया घटनाओ के पीछे की कहानी बताती है कि एक राजकुमार की यहां निर्दयतापूर्वक हत्या कर दी गई थी, जिसके बाद उसकी आत्मा यहां भटकती है और रात के समय किले से चीखने की आवाजें भी सुनाई देती है।

रोहताश गढ़ का किला



रोहताश गढ़ का किला बिहार के रोहताश जिले में स्थित एक प्राचीन किला है जिसे भारत में सबसे रहस्यमयी किले में से एक माना जाता है। इसे किले का निर्माण अयोध्या के राजा हरिचन्द्र के पुत्र रोहताशव ने

भारत के सबसे रहस्यमयी किले

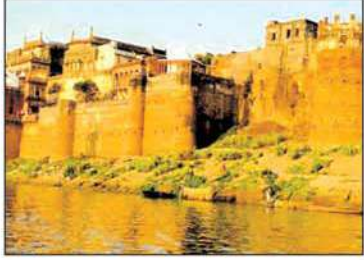
करबाया था। यह किला समुद्र तल से लगभग 1500 मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित है जिसका इस्तेमाल युद्ध के दौरान छिपने के लिए किया जाता था। इस किले की एक ऐसी कहानी प्रसिद्ध है जिसे बारे में सुनकर आपके रोंगटे खड़े हो जायेंगे। जी हाँ कई स्थानीय लोगो और किंवदन्तीयों के अनुसार माना जाता है की इस किले की दीवारों से अक्सर खून निकलता था और रात में जोर जोर से चीखने की आवाजें भी सुनाई देती है। जिसके पीछे का कारण आज भी एक रहस्य बना हुआ है जिस कारण पर्यटकों के साथ साथ स्थानीय लोग भी दिन ढलने के बाद यहाँ जाने से डरते है।

नाहरगढ़ किला जयपुर



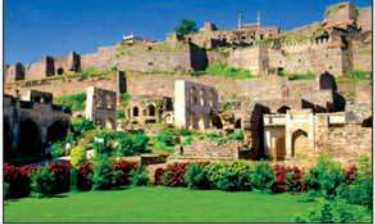
नाहरगढ़ किला राजस्थान का एक बहुत ही आकर्षक किला है जिसे भारत के सबसे डरावने किले में शामिल करने के पीछे एक रहस्यमयी कहानी जुड़ी है। यहां के स्थानीय लोगों अनुसार माना जाता है यहां पर एकदम से तेज हवाएं चलने लगती है और कई बार दरवाजे के कांच टूट कर गिर जाते हैं। यहाँ कभी-कभी एक दम से गर्मी और एक दम से ठण्ड महसूस होने लगती है जो आज भी एक रहस्यमयी घटना बनी हुई है। किले में जाने वाले कई लोगों को कुछ अजीब चीजों का एहसास भी हो चुका है। इस किले का निर्माण सवाई राजा मान सिंह ने अपनी रानियों के लिए करबाया था, लेकिन राजा की मृत्यु के बाद नाहरगढ़ किले को भुतिया कहा जाने लगा था और इस किले में राजा की प्रेत आत्मा होने का भी दावा किया जाता है।

चुनारगढ़ का किला



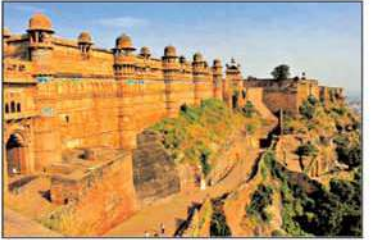
चुनारगढ़ की धरती पर कई सारे तपसियों में तपस्या की है और यह स्थित चुनारगढ़ का किला भारत के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। चुनारगढ़ के किला का इतिहास के पन्नों में एक महत्वपूर्ण स्थान है जिसे लगभग 5000 साल पुराना माना जाता है। जिस पहाड़ी में इस किले का निर्माण किया गया है वो मानव के चरण जैसी प्रतीत होती है। चुनारगढ़ का किला भारत के रहस्यमयी किले में से एक है जिसका प्रमाण इसकी अद्भुद वनवाट से भी मिलता है। इस किले के निर्माण के पीछे का रहस्य आज भी रहस्य बना हुआ है, क्योंकि बलुआ पत्थर से निर्मित इस किले के हर पत्थर पर किसी ना किसी का चिन्ह है। इसके साथ साथ स्थानीय लोगो और किंवदन्तीयों के अनुसार कहा जाता है इस किले में योगिराज भृतुहरि ने समाधी ले थी जिनकी आत्मा आज भी इस किले में वास करती है।

गोलकोंडा किला



हैदराबाद में हुसैन सागर झील से लगभग 9 किमी की दूरी पर स्थित गोलकोंडा किला भारत के रहस्यमयी किले में से एक है। गोलकोंडा किला का निर्माण 13 वीं शताब्दी में किया गया था, लेकिन इसके कई शासकों की सनक और रिवितयों के तहत विभिन्न नवीकरण देखे गए हैं। बता दे गोलकोंडा फोर्ट में भी अजीबो गरीब घटनायें तथा इस किले में राजा की आत्मा को नृत्य करते देखा गया है जो कभी राजा का नृत्य मंच हुआ करता था। इनके अलावा कई शूटिंग गुप्स द्वारा इस किले में अजीब आवाजें और लाइट्स दिखे जाने की बातें भी कही गयी हैं।

ग्वालियर किला



ग्वालियर का किला मध्य भारत की सबसे प्राचीन और ऐतिहासिक जगहें में से एक है। ग्वालियर फोर्ट ग्वालियर शहर में गोपाचल नामक पहाड़ी पर स्थित है, जिसे ग्वालियर का किला के नाम से भी जाना जाता है। प्राचीन इतिहासकारों का अनुसार इस किले का निर्माण बघेल राजायों द्वारा किया गया था जिन्होंने इस पर लगभग 1000 साल शासन किया था। इस किले में प्राचीन काल की कई मूल्यवान और रहस्यमयी मूर्तियाँ हैं। कई खोजकर्ता और इतिहासकार का दावा है की इस किले में कई रहस्यमयी सुरंगे और तयखाने भी है और इन तयखानों में बहुत सारा खजाना छुपे होने का भी दावा किया जाता है। इस किले की एक बात और अभी तक रहस्य बनी हुई है वो है इस ब्लकिले के निर्माण की अविधिज्ञ जी हाँ स्थानीय लोगो का कहना है की इस किले का निर्माण सिर्फ एक रात में जिनो द्वारा किया गया था जो बकाई रहस्यमयी और अविश्वसनीय है। लेकिन इस बात की अभी तक औपचारिक पुष्टि नहीं की गयी है की यह किला कितने दिन में और कितने के द्वारा बनाया गया है।

गढ़कुंडार का किला

मध्यप्रदेश के निवाड़ी जिले के एक गाँव में स्थित गढ़कुंडार का किला भारत के सबसे डरावने किले में से एक है। कहीं जाते है यह किला कई रहस्यों और चमत्कारों से भरा हुआ है, इसीलिए आज भी लोग दिन ढलने के बाद इसके पास से गुजरने में भी डरते है। आज भारत में इसे किले से जुडी डरावनी कहानियां प्रसिद्ध है। स्थानीय लोगो का मानना है की बहुत समय पहले इस किले में कुछ लोगो की मौत हुई थी जिनकी आत्मायें आज भी इस किले में भटक रही है। इस किले से जुडी एक रहस्यमयी कहानी ने सबसे रोंगटे खड़े कर दिये है जी हाँ कहीं जाता है एक बार इस किले में एक बरात के लगभग 70 से 80 से लोग रहस्यमयी ढंग से गायब हो गये थे जिनका पता आज भी नहीं लगाया जा सका है की वो लोग कहा गायब हो गये। इतना डरावना होने के वावजूद भी दिन में यहाँ पर्यटकों की काफी भीड़ देखी जाती है जो इस किले के रहस्य का पता लगाने आते है।



भारत का बरमुडा ट्राएंगल

भारत और चीन की सीमा पर शांगरी ला घाटी है, जिसे दुनिया की सबसे रहस्यमयी जगहों में गिना जाता है. यहां जाकर वस्तु या व्यक्ति का अस्तित्व दुनिया से गायब हो जाता है.

हम जिक्र कर रहे हैं शांगरी ला घाटी का. ये तिब्बत और अरुणाचल की सीमा पर है. तंत्र मंत्र के कई जाने माने साधकों ने अपनी किताबों में इसका जिक्र किया है. जिसमें सबसे प्रमुख हैं पदम विभूषण और साहित्य अकादमी से नवाजे गए और गर्वनमेंट संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य रहे डॉ. गोपीनाथ कविराज. उन्होंने अपनी किताब में इस जगह का जिक्र किया है. तिब्बती साधक भी इसके बारे में कहते रहे हैं. इस घाटी को उस बरमुडा ट्राएंगल की तरह ही दुनिया की सबसे रहस्यपूर्ण जगह माना जाता है. कहा जाता है कि भू-हीनता का प्रभाव रहता है. ये भी कहा जाता है कि इस घाटी का सीधा संबंध दूसरे लोक से है.

जाने माने तंत्र साहित्य लेखक और विद्वान अरुण कुमार शर्मा ने भी अपनी किताब तिब्बत की वह रहस्यमय घाटी में इस जगह का विस्तार से जिक्र किया है. बकोल उनके दुनिया में कुछ ऐसी जगहें हैं जो भू-हीनता और वायु-शून्यता वाली हैं, ये जगहें वायुमंडल के चौथे आयाम से प्रभावित होती हैं. माना जाता है इन जगहों पर जाकर वस्तु या व्यक्ति का अस्तित्व दुनिया से गायब हो जाता है. ऐसी ही जगहों के रूप में इस शांगरी ला घाटी का भी नाम आता है. शांगरी ला घाटी को बरमुडा ट्राएंगल की तरह बताया जाता है. बरमुडा ट्राएंगल ऐसी जगह है, जहां से गुजरने वाले पानी के जहाज और हवाई जहाज गायब हो जाते हैं. वह स्थान भी भू हीनता के क्षेत्र में आता है. कहा जाता है कि चीन की सेना ने कई बार इस जगह को तलाशने की भी कोशिश की लेकिन उसको कुछ नहीं मिला. तिब्बती

विद्वान युत्सुंग के अनुसार इस घाटी का संबंध अंतरिक्ष के किसी लोक से है.

पृथ्वी का आध्यात्मिक नियंत्रण केंद्र
तिब्बती भाषा की किताब काल विज्ञान में इस घाटी का जिक्र मिलता है. जिसमें लिखा है कि दुनिया की हर चीज देश, काल और निमित्त से बंधी है लेकिन इस घाटी में घाटी में काल यानी समय का असर नहीं है. वहां प्राण, मन के विचार की शक्ति, शारीरिक क्षमता और मानसिक चेतना बहुत ज्यादा बढ़ जाती है. इस जगह को पृथ्वी का आध्यात्मिक नियंत्रण केंद्र भी कहा जाता है. आध्यात्म क्षेत्र, तंत्र साधना या तंत्र ज्ञान से जुड़े लोगों के लिए यह घाटी भारत के साथ-साथ विश्व में मशहूर है. युत्सुंग खुद के वहां जाने का दावा करते हैं. बकोल उनके वहां ना सूर्य का प्रकाश था और ना ही चांद की चांदनी वातावरण में चारों ओर एक दुधिया प्रकाश फैला हुआ था और साथ ही विविध सी खामोशी. युत्सुंग ने वाराणसी के तंत्र विद्वान अरुण शर्मा को बताया वहां एक ओर मठों, आश्रमों और विभिन्न आकृतियों के मंदिर थे और दूसरी ओर दूर तक फैली हुई संगीला का सुनसान घाटी. यहां के तीन साधना केंद्र प्रसिद्ध हैं. पहला- ज्ञानगंज मठ, दूसरा- सिद्ध विद्वान आश्रम और तीसरा- योग सिद्धाश्रम. शांगरी ला घाटी को सिद्धाश्रम भी कहते हैं. सिद्धाश्रम का वर्णन महाभारत, वाल्मिकी रामायण और वेदों में भी है. जेम्स हिल्टन ने अपनी पुस्तक लार्ड होराइजन में इस रहस्यमय घाटी के बारे में कहा, वहां लोग सैकड़ों बरसों तक जीवित रहते हैं. उनकी पुस्तक को पढ़कर कई देशी-विदेशी खोजियों ने शांगरी ला घाटी का पता लगाने की कोशिश की लेकिन सफल नहीं हुए. कुछ तो हमेशा के लिए गायब ही हो गए. माना जाता है कि चीन की सेना एक लामा का पीछा करते हुए इस घाटी तक आई लेकिन शांगरी ला का पता नहीं लगा सकी.

रहस्यमई है शांगरी ला घाटी

कहा जाता है कि यह अरुणांचल प्रदेश तथा तिब्बत के बीच में है। जैसे की बरमुडा ट्राएंगल में कोई वस्तु अगर चली जाती है तो वह दुबारा लौट के नहीं आ सकती ठीक वैसे ही शांगरी ला घाटी के बारे में कहा जाता है। इसीलिए इसे रहस्यमई कहा गया है। इस घाटी को बिना किसी तकनीक के नहीं देख सकते। कहा जाता है कि यह घाटी चौथे आयाम अर्थात समय से प्रभावित होने के कारण रहस्यमई बनी हुई है। इस घाटी के बारे में और जानने के लिए आपको काल विज्ञान नामक किताब को पढ़ना पड़ेगा। जो कि आज भी तिब्बत के तवांग मठ के पुस्तकालय में रखी हुई है। इस पुस्तक में लिखा हुआ गई की यह त्री आयामी दुनिया एक निश्चित स्थान समय तथा तरीके से काम करती है वहीं शांगरी ला घाटी में समय नगण्य है। इसका मतलब यह है कि अगर आप वहां जाकर रहते हैं तो आपकी आयु बहुत ही धीमी गति से बढ़ेगी। आप उसी उम्र में जितने साल चाहें जी सकते हैं। शांगरी ला घाटी में प्राण मन और विचारों की शक्ति एक स्तर तक बढ़ जाती है। इसे हम आध्यात्मिक शक्ति का एकमात्र केंद्र कह सकते हैं। यह भी कहा जाता है कि शांगरी ला घाटी दूसरे ब्रह्माण्ड में जाने का रास्ता भी है। कहा जाता है कि कोई भी आम मनुष्य उस घाटी को देख नहीं सकता जब तक कि वहां के रहने वाले सिद्ध व्यक्ति ना चाहें। जो लोग इस घाटी से परिचित हैं इनका कहना है कि प्रसिद्ध योगी श्यामाचरण लाहिरी के गुरु अवतारी बाबा जिन्होंने आदि शंकराचार्य को भी दीक्षा दी थी, सांगरी ला घाटी के किसी सिद्ध आश्रम में अभी भी निवास कर रहे हैं। जो कभी कभी आकाश मार्ग से चल कर अपने शिष्यों को दर्शन भी देते हैं। कहने वाले तो यह भी कहते हैं कि चीन ने भारत पे हमला भी इसी शांगरी ला घाटी की वजह से ही किया था। वयुकी उनको भरोसा था कि यह भारत में ही कही है। जो कि उन्हें कभी मिला ही नहीं।



न्यूजीलैंड दूर की ODI टीम चर्चा में: यशस्वी को मौका क्यों नहीं?

नमन के चयन और बुमराह की गैरमौजूदगी से उठे सवाल

○ **एजेंसी, नई दिल्ली।**

न्यूजीलैंड दौरे के लिए भारतीय वनडे टीम के चयन के बाद कई फैसले चर्चा में हैं। यशस्वी जायसवाल को टीम में जगह नहीं मिली, जबकि नमन धीर को मौका दिया गया है। दूसरी ओर, प्रसिद्ध कृष्णा की फिटनेस को लेकर अनिश्चितता और जसप्रीत बुमराह की गैरमौजूदगी ने भी टीम संयोजन पर सवाल खड़े किए हैं। 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप को देखते हुए यह दौरा भारतीय टीम के लिए खिलाड़ियों को परखने और मजबूत संयोजन तैयार करने का अवसर है। ऐसे में यह समझना जरूरी है कि टीम चयन के किन पहलुओं पर चर्चा हो रही है और इन फैसलों का विश्व कप की तैयारी से क्या संबंध है।

1. यशस्वी जायसवाल को बाहर रखने का फैसला क्यों चर्चा में है?

यशस्वी जायसवाल को पिछली कुछ वनडे सीरीज में भारतीय टीम में शामिल किया गया था। इससे यह उम्मीद बनी थी कि उन्हें भविष्य के लिए बैकअप ओपनर के रूप में तैयार किया जा सकता है। हालांकि, टीम में जगह मिलने के बावजूद उन्हें प्लेइंग इलेवन में खेलने का अवसर नहीं मिला।

एआई से बनी तस्वीरों और वीडियो पर नेहा शर्मा ने अपनाया सख्त रुख, कानूनी कार्रवाई की दी चेतावनी



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के गलत इस्तेमाल को लेकर दुनियाभर में चिंता लगातार बढ़ रही है। खासकर सेलिब्रिटीज इससे ज्यादा प्रभावित होते नजर आ रहे हैं। एआई की मदद से डीपफेक, एडिटेड वीडियो और किसी की पहचान का गलत इस्तेमाल करने के अभी तक कई मामले सामने आए हैं। ऐसे मामलों में कई एक्टर्स ने कानूनी कार्रवाई भी की है। अब इस लिस्ट में एक्ट्रेस नेहा शर्मा का नाम भी जुड़ गया है। उन्होंने अपने चेहरे और पहचान का इस्तेमाल करके एआई से वीडियो और तस्वीरें बनाने वालों को सख्त चेतावनी दी है।

नेहा शर्मा ने क्या किया पोस्ट?

शनिवार को नेहा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'मेरे चेहरे या पहचान का इस्तेमाल करके मेरी सहमति के बिना एआई से वीडियो या तस्वीरें बनाने वाले तुरंत ऐसा करना बंद करें। इसे लेकर आपको औपचारिक रूप से चेतावनी दी जा रही है।' उन्होंने आगे लिखा, 'मेरी पहचान का इस्तेमाल करके पहले से पोस्ट किए गए ऐसे सभी कंटेंट को तुरंत हटाएं। साथ ही आगे से मेरी पहचान का इस्तेमाल करके कोई भी एआई वीडियो या तस्वीर न बनाएं, न एडिट करें और न ही उन्हें शेयर करें। इस तरह मेरे चेहरे का इस्तेमाल करके मेरी गलत छवि पेश करना या मेरी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाना बिल्कुल भी स्वीकार

न्यूजीलैंड दौरे के लिए यशस्वी को टीम में शामिल नहीं किया गया है, जबकि ऋतुवाज गायकवाड़ को मौका मिला है। शुभमन गिल की अनुपस्थिति वाले चौथे और पांचवें वनडे के लिए भी यशस्वी का चयन नहीं हुआ है। यहां सबसे अहम सवाल टीम में बैकअप ओपनर तैयार करने की रणनीति का है। विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में मुख्य खिलाड़ियों के चोटिल होने या अनुपलब्ध रहने की स्थिति में वैकल्पिक खिलाड़ियों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। यशस्वी को पहले टीम में शामिल करने और फिर इस दौरे से बाहर रखने के फैसले को इसी संदर्भ में देखा जा रहा है।

2. नमन धीर के चयन से ऑलराउंडर की भूमिका पर चर्चा

भारतीय वनडे टीम में नमन धीर को शामिल किए जाने के बाद ऑलराउंडर विकल्पों पर भी चर्चा हो रही है। इस संदर्भ में शिवम दुबे का नाम सामने आता है, जो आक्रमक बल्लेबाजी के साथ मध्यम गति से गेंदबाजी करने की

अनीत पड्डा: क्या 'शक्ति शालिनी' की रिलीज डेट में हुआ बदलाव?

अनीत पड्डा की फिल्म 'शक्ति शालिनी' उनकी मच-अवेटेड फिल्मों में से एक है। हाल ही में इसकी रिलीज डेट में बदलाव को लेकर खबरें सामने आ रही थीं। लेकिन अब फैस को चिंता लेने की जरूरत नहीं है।

कब रिलीज होगी 'शक्ति शालिनी'?

फिल्म की रिलीज डेट को लेकर पिछले कुछ समय से चर्चा थी कि इसे साल 2027 तक टाला जा सकता है। हालांकि, अब इन खबरों पर विराम लग गया है। फिल्म तय समय पर ही सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अनीत पड्डा की फिल्म 'शक्ति शालिनी' 24 दिसंबर 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। खास बात यह है कि इसका मुकाबला सीधे शाहरुख खान की मच अवेटेड फिल्म 'किंग' से होने वाला है। फिल्म की रिलीज डेट की पुष्टि एक प्रमोशनल वीडियो से हुई, जिसे 'प्रहार' के साथ दिखाया गया था। इससे पहले ऐसी खबरें सामने आई थीं कि शाहरुख खान की फिल्म 'किंग' से टक्कर से बचने के लिए 'शक्ति शालिनी' की रिलीज आगे बढ़ाई जा सकती है। हालांकि, अब फिल्म की रिलीज डेट में बदलाव की खबरें सही साबित नहीं हुई हैं। दोनों फिल्मों के एक ही दिन रिलीज होने से क्रिसमस के मौके पर बॉक्स ऑफिस पर बड़ा मुकाबला देखने को मिल सकता है। एक तरफ शाहरुख खान की एक्शन फिल्म 'किंग' है, तो दूसरी ओर अनीत पड्डा की 'शक्ति शालिनी' है, जो पॉपुलर हॉरर यूनिवर्स



का हिस्सा है। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि दर्शकों का ज्यादा प्यार किस फिल्म को मिलता है।

शाहरुख खान की 'किंग' के बारे में

शाहरुख खान की फिल्म 'किंग' का आधिकारिक एलान पिछले साल नवंबर में किया गया था। अभिनेता के जन्मदिन यानी 2 नवंबर को फिल्म का टाइटल रिवील वीडियो जारी हुआ था। रेड घिलीज एंटरटेनमेंट और माफिल्क्स पिक्चर्स के बैनर तले बन रही इस फिल्म में शाहरुख खान पहली बार अपनी बेटी सुहाना खान के साथ पर्दे

पर नजर आएंगे। फिल्म को लेकर फैस के बीच पहले से ही काफी एक्साइटमेंट है।

क्या है 'शक्ति शालिनी' की कहानी?

'शक्ति शालिनी' का आधिकारिक एलान पिछले साल दिवाली के मौके पर किया गया था। फिल्म का टाइटल प्रोमो 'थामा' के साथ दिखाया गया था। इस प्रोमो में मुख्य किरदार को 'रक्षक', 'निनाशक' और 'सबकी मां' जैसे शब्दों के साथ पेश किया गया था। फिल्म को पॉपुलर हॉरर यूनिवर्स की अगली कड़ी के तौर पर देखा जा रहा है।



बीसीसीआई चयन समिति: कौन होगा टीम इंडिया का नया मुख्य चयनकर्ता?

○ **एजेंसी, रायपुर।**

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की सीनियर पुरुष चयन समिति में खाली पद को भरने की प्रक्रिया अब अहम मोड़ पर पहुंच गई है। पूर्व भारतीय क्रिकेटर वसीम जाफर की दावेदारी ने इस दौड़ को नया मोड़ दे दिया है। जाफर उन पूर्व खिलाड़ियों में शामिल हैं, जिनका क्रिकेट सलाहकार समिति ने वर्चुअल इंटरव्यू लिया है। इस पद के लिए पूर्व भारतीय स्पिनर रमेश पोवार, पूर्व तेज गेंदबाज सलिल अंकोला और बड़ौदा के पूर्व क्रिकेटर जैकब मार्टिन व कॉनर विलियम्स के नाम भी सामने आए हैं। इस बीच, इस पद के लिए प्रबल दावेदार माने जा रहे पार्थिव पटेल ने आवेदन नहीं किया। अब क्रिकेट सलाहकार समिति को पांचवें चयनकर्ता के नाम पर अंतिम फैसला करना है।

क्यों खाली हुआ चयन समिति का पद?

सीनियर पुरुष चयन समिति में यह पद अजीत अमरकर के मुख्य चयनकर्ता पद से हटने के बाद खाली हुआ। इसके बाद बीसीसीआई ने नए चयनकर्ता की नियुक्ति के लिए आवेदन आमंत्रित किए। फिलहाल पूर्व भारतीय बार हाथ के स्पिनर प्रज्ञान ओझा अंतरिम अध्यक्ष के तौर पर चयन समिति की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। नए सदस्य की नियुक्ति सिर्फ चयन समिति में एक खाली जगह भरने तक सीमित नहीं है। इसका असर सीमित के नेतृत्व पर भी पड़ सकता है, क्योंकि बीसीसीआई के संविधान में मुख्य चयनकर्ता चुनने के लिए टेस्ट मैचों में खेलने के अनुभव को महत्व दिया गया है।



कैसे चुना जाता है मुख्य चयनकर्ता?

बीसीसीआई के संविधान के मुताबिक, पांच सदस्यीय चयन समिति में जिस चयनकर्ता ने सबसे ज्यादा टेस्ट मैच खेले होते हैं, उसे समिति का अध्यक्ष बनाया जाता है। इसी नियम के कारण वसीम जाफर की दावेदारी अहम मानी जा रही है। जाफर ने भारत के लिए 31 टेस्ट मैच खेले हैं, जबकि प्रज्ञान ओझा के नाम 24 टेस्ट मैच हैं। ऐसे में अगर जाफर चयन समिति के सदस्य नियुक्त होते हैं, तो टेस्ट मैचों के अनुभव के आधार पर वह ओझा से आगे होंगे। हालांकि, अंतिम नियुक्ति और समिति के नेतृत्व को लेकर फैसला बीसीसीआई की प्रक्रिया के तहत ही होगा।

वसीम जाफर का क्रिकेट करियर कैसा रहा है?

वसीम जाफर भारतीय घरेलू क्रिकेट के सबसे सफल बल्लेबाजों में गिने जाते हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में 19 हजार से अधिक रन बनाए हैं। वह मुंबई और विदर्भ की ओर से खेलते हुए रणजी ट्रॉफी में भी अहम योगदान दे चुके हैं। जाफर का अनुभव सिर्फ खिलाड़ी तक सीमित नहीं रहा है। वह आईपीएल में कोचिंग की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। इसके अलावा भारत और बांग्लादेश की अंडर-19 टीमों के साथ भी काम कर चुके हैं। वह विदर्भ के सलाहकार रहे हैं और 2026-27 के घरेलू सत्र में हैदराबाद टीम के गेंटर की भूमिका निभा रहे हैं। घरेलू क्रिकेट का लंबा अनुभव और कोचिंग से जुड़ाव उनकी दावेदारी को चर्चा में बनाए हुए है।

रमेश पोवार और सलिल अंकोला भी दौड़ में

वसीम जाफर के अलावा रमेश पोवार और सलिल अंकोला भी सीनियर चयन समिति के खाली पद के लिए इंटरव्यू देने वाले प्रमुख नामों में शामिल हैं। **रमेश पोवार:** पूर्व भारतीय ऑफ स्पिनर ने भारत के लिए दो टेस्ट और 31 वनडे मैच खेले हैं। वह दो अलग-अलग कार्यकाल में भारतीय महिला क्रिकेट टीम के मुख्य कोच भी रह चुके हैं। इससे पहले उन्हें जूनियर पुरुष चयन समिति के प्रमुख पद की दौड़ में आगे माना जा रहा था। **सलिल अंकोला:** मुंबई के पूर्व तेज गेंदबाज अंकोला ने भारत के लिए एक टेस्ट और 20 वनडे मैच खेले हैं। वह जनवरी 2023 से अगस्त 2024 तक राष्ट्रीय चयनकर्ता रहे थे। बाद में क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने के उद्देश्य से उनकी जगह अजय रात्रा को शामिल किया गया था। इसके अलावा पूर्व भारतीय क्रिकेटर जैकब मार्टिन और कॉनर विलियम्स के नाम भी इंटरव्यू की प्रक्रिया में शामिल बताए गए हैं। मार्टिन भारत के लिए 10 वनडे मैच खेल चुके हैं।

कर्टनी कार्दशियन ने सुनाया कार में यूरिन करने का किस्सा

रियलिटी स्टार कर्टनी कार्दशियन गाड़ी चलाते समय अपने अप्रत्याशित व्यवहार के लिए जानी जाती हैं। हाल ही में वह शो 'द कार्दशियंस' सीजन 8 के एक एपिसोड में नजर आईं। इस दौरान वह अपने पति ट्रैविस बार्कर के साथ अपने बेटे लैंडन बार्कर को ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के लिए डीएमवी (डिपार्टमेंट ऑफ मोटर व्हीकल्स) लेकर गईं। यह उनका दूसरा प्रयास था, क्योंकि पिछले एपिसोड में वह असफल रही थीं। चार बच्चों की मां ने कई वर्ष पहले अपना लाइसेंस मिलने के अनुभव को याद किया। उन्होंने कहा, "मेरी पहली कार एक काली बीएमडब्ल्यू थी। इस पर ट्रैविस ने पूछा, 'रक्या यह वही कार है, जिसमें आपने यूरिन (पेशाब) कर दिया था?'" उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, वह दूसरी, सफेद कार थी। काली कार के साथ मैं ऐसा कभी नहीं करती।" उन्होंने बताया कि अपनी पहली कार से उनके दो एक्सीडेंट हुए थे और दोनों बार गलती उन्होंने की थी, जिससे कार पूरी तरह बर्बाद हो गई। अब वह खुद को एक 'बेहदसरीन ड्राइवर' मानती हैं। 47 वर्षीय कर्टनी कार्दशियन के कार में यूरिन करने की बात फिर से सामने आई। किम ने अपनी बहन के रवैये के बारे में कहा, "उसे किसी बात की परवाह नहीं है। अगर उसे यूरिन आता है, तो वह बस वहीं बैठे-बैठे, गाड़ी चलाते हुए ही कर देती है।" इसके बाद किम ने अपनी बहन को फोन करके उस घटना के बारे में पूछा। किम ने पूछा, 'रक्या तुमने कार में यूरिन नहीं किया था?' कर्टनी कार्दशियन ने कहा, "हां, मैंने लंच में सात 'आइस टी' पी ली थीं।



फिर मैं फ्रीव पर थी और बाथरूम जाने के लिए फ्रीव से बाहर नहीं निकल सकती थी। इसलिए मैंने वही सीट पर ही यूरिन कर दिया।"

उन्होंने बताया, "मैं अपने स्टोर 'स्मूच' के पिछले हिस्से में पहुंची, क्योंकि मेरी शिफ्ट का समय हो गया था। मैं अंदर गई और खुद को साफ किया।"

खुशी कपूर मालदीव में मना रहीं छुट्टियां, समंदर किनारे दिखा ग्लैमरस अंदाज

‘द आर्चीज’ से फिल्म इंडस्ट्री में डेब्यू करने वाली खुशी कपूर इन दिनों वेकेशन का आनंद ले रही हैं। सोशल मीडिया पर शेयर की गई तस्वीरों में एक्ट्रेस समुंद्र किनारे चिल करती नजर आ रही हैं।

खुशी कपूर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर वेकेशन की फोटोज शेयर की हैं, जिनमें वह समंदर के बीच सुकून भरे पल बिताती नजर आ रही हैं। उनकी इन तस्वीरों में बीच, नीला पानी और खूबसूरत नजारे देखने को मिल रहे हैं।

खुशी कपूर ने अपनी यह ट्रिप जेडब्ल्यू मैरियट मालदीव काफू एटोल आइलैंड रिजॉर्ट में बिताई। तस्वीरों में वह कभी समंदर के बीच बने नेट पर आराम करती दिख रही हैं, तो कभी बीच पर खड़े होकर इसके अलावा, अभिनेत्री ने जेट स्की

और स्नॉर्कलिंग जैसी एक्टिविटीज का भी आनंद लिया। उनकी तस्वीरों में छुट्टियों की मस्ती और खूबसूरत नजारों का शानदार मेल देखने को मिल रहा है।

इन तस्वीरों में खुशी का स्टायलिश अंदाज भी लोगों का ध्यान खींच रहा है। कहीं वह प्रिंटेड स्विमसूट में नजर आ रही हैं, तो कहीं पिंग आउटफिट में दिखाई दे रही हैं।

अभिनेत्री ने इन तस्वीरों को साझा करते हुए कैप्शन में लिखा, ‘No place I’d rather be’, जिसका मतलब है कि उनके लिए इससे बेहतर जगह कोई नहीं हो सकती।

खुशी कपूर की इन तस्वीरों से साफ है कि वह मालदीव में अपने समय को खूब एंजॉय कर रही हैं। उनकी यह पोस्ट सोशल मीडिया पर उनके फैस को भी खूब पसंद आ सकती है।